



भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

तशं

संयुक्तांक
143-144



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

हिन्दी

भारतीय संस्कृति
की आत्मा है



सोंधी सुगंध,
मीठी सी भाषा ।
गर्व से कहो
हिन्दी है मेरी भाषा ॥

हिन्दी दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

(केवल विभागीय वितरण के लिए)



भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी पत्रिका

तरंग

(संयुक्तांक : 143-144)

सितम्बर 2022 - अगस्त 2023

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)

उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

- ▶ टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए।
- ▶ मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए।
- ▶ शब्दों के लिए अटकिए नहीं।
- ▶ अशुद्धियों से घबराइए नहीं।
- ▶ अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए।

सम्पादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।
रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं।

मूल्य: “राजभाषा के प्रति निष्ठा”

प्रथम आवरण पृष्ठ : प्रकाशमान कार्यालय का मनोरम दृश्य

अन्तिम आवरण पृष्ठ : कार्यालय का लोगो

तरंग परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री राम हित

प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रधान एवं कार्यकारी संपादक

श्री अवनीन्द्र कुमार राय

उप महालेखाकार / प्रशासन एवं ए.एम.जी.-IV
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री सुरेन्द्र कुमार

वरिष्ठ उप महालेखाकार / ए.एम.जी.-V
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

श्री श्रेयांश सिंह

उप महालेखाकार / ए.एम.जी.-II एवं III
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

संपादक

श्री राजेश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी

सह संपादक मण्डल

श्री दिलीप कुमार सिंह

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(लेखापरीक्षा - द्वितीय)

श्री नील श्रीवास्तव

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी

श्री कृष्ण मोहन

पर्यवेक्षक

श्री संजय मीना

सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी

श्री सिद्धार्थ शंकर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'तरंग' का 143-144वाँ संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों तथा संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके अथक प्रयास से पत्रिका इस उन्नति के शिखर तक पहुंचने में सफल रही है।

भाषा हमारे असंख्य भावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है जिसके द्वारा हम न केवल दूसरों के विचारों एवं ज्ञान से अवगत हो सकते हैं अपितु अपने विचारों को जनमानस तक सरलता से पहुँचा भी सकते हैं। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अपने सृजनात्मक कौशल एवं मनोभावों को अपनी राजभाषा हिन्दी में व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

'तरंग' पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को बधाई देते हुए मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित ।

(राम हित)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के नवीनतम अंक (143-144वें संयुक्तांक) का प्रकाशन होने जा रहा है। इस सम्बन्ध में मेरी ओर से ढेरों शुभकामनायें। कार्यालय की पत्रिका न केवल अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपनी रचना प्रदर्शित करने हेतु एक सफल मंच प्रदान करती है अपितु, इसके साथ ही हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। पत्रिका का यह अंक राजभाषा के संचार में एक सराहनीय कार्य है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह नवीनतम अंक, सभी को सृजनात्मक अभिव्यक्ति विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनायें एवं इसके संपादक मंडल तथा रचनाकारों को बधाई।

जनता को सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Uplift in Public Interest

तान्या सिंह
(तान्या सिंह)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा - द्वितीय)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ



संदेश

यह अत्यंत ही प्रसन्नता का विषय है कि हिन्दी पत्रिका 'तरंग' (143-144वें संयुक्तांक) का प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के इस अंक को मूर्त रूप प्रदान करने में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

हिन्दी भाषा बड़ी ही सरल एवं सहज प्रवृत्ति रखने वाली भाषा है, जिसे सहजभाव से संपूर्ण भारत वर्ष में तो अपनाया ही जा रहा है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी इसकी प्रतिष्ठा निरंतर बढ़ रही है। राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिन्दी के लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिन्दी पत्रिकाओं का विशेष महत्त्व है। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सभी पदाधिकारियों को अपनी भावनाओं, अनुभूतियों एवं कल्पना शक्ति को उजागर करने का अवसर मिलता है।

'तरंग' पत्रिका भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और हिन्दी प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों की लेखन प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है साथ ही राजभाषा हिन्दी के प्रति कार्यालय के समर्पण का प्रतीक भी है। कार्यालय के सभी कर्मचारियों का राजभाषा हिन्दी के प्रति सकारात्मक भाव भी प्रशंसनीय है, उन्होंने पत्रिका के माध्यम से अपनी सृजनात्मक क्षमता को दर्शाने तथा अपने भावों को पाठकों के बीच रखने का प्रयास किया है तथा पत्रिका के इस अंक को सफल बनाने में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

पत्रिका के अनवरत प्रकाशन एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

(शंजय कुमारी)

प्रधान निदेशक
लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
उत्तर प्रदेश, लखनऊ



संदेश

कार्यालय की विभागीय राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के नवीनतम अंक (143-144 वें संयुक्तांक) का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है। 'तरंग' पत्रिका कार्यालय की रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कार्यालय पत्रिका के द्वारा हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिलता है। राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास एवं प्रयोग में वृद्धि के लिए यह एक सराहनीय कदम है। हमारी पत्रिका ने निःसंदेह कार्यालय में हिन्दी भाषा के प्रयोग में सतत वृद्धि एवं हिन्दी के प्रति सकारात्मक वातावरण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कार्यालय के सभी अधिकारी / कर्मचारी राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने में सक्रिय भूमिका निभाते रहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हृदय से धन्यवाद के साथ-साथ सभी रचनाकारों का अभिनंदन करते हुए यह शुभकामनाएँ देता हूँ कि पत्रिका इसी तरह अपने पथ पर निरंतर अग्रसर होती रहेगी।

सत्य को सर्वोच्च लेखापरतंत्रा सत्य
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

(अभिषेक सिंह)

महालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) - द्वितीय
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम) उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा विभागीय राजभाषा पत्रिका तरंग के नवीनतम अंक (143-144वें संयुक्तांक) का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय परिवेश में तरंग पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रति कार्यालय के कर्मियों की लेखन क्षमता, शैली और कौशल द्वारा उनकी भाषा समृद्धि और रचनात्मकता को प्रतिबिंबित ही नहीं करती है, बल्कि उनको प्रोत्साहित भी करती है।

कार्यालयीन पत्राचार एवं अधिक से अधिक कार्यों को हिन्दी में सम्पादित कर हम जहाँ एक ओर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करते हैं, वहीं दूसरी ओर राजभाषा को पुष्पित और पल्लवित होने का अवसर भी प्रदान करते हैं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन में अपनी रचनाओं द्वारा सहयोग प्रदान करने वाले समस्त अधिकारी, कर्मचारी एवं संपादन मंडल, राजभाषा के प्रति अतुलनीय निष्ठा हेतु बधाई के पात्र हैं।

मैं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति एवं स्वर्णिम भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
प्रशासनिक एवं वित्तीय के माध्यम से विकास

(डॉ. श्रुद्धेंद्र कुमार)

वरिष्ठ उप महालेखाकार / ए. एम. जी.- V एवं ।
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज



संदेश

मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'तरंग' अपने 143-144वें अंक की स्वर्णिम यात्रा पूर्ण कर रही है, जिसके लिए मैं संस्थापक मंडल एवं समस्त रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

हिन्दी भारत की संविधान सम्मत राजभाषा है। नदी के सुन्दर और मजबूत तटबंधों और उस पर बसे नगरों की भांति ही वर्तमान समाज का दायित्व राजभाषा हिन्दी की शब्द संपदा और उसके शब्दानुशासन को सुंदर और मजबूत बनाना है, जिससे यह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति सहजता और सुदृढ़ता से कर सके। यह वर्तमान समाज का कर्तव्य और उत्तरदायित्व दोनों ही हैं और यही भविष्य का आधार भी बनेगा। हम अपनी भाषा से जितना दूर रहेंगे अपनी धरोहर, अपनी विरासत और अपनी संस्कृति से उतने ही दूर होते जायेंगे। यह समय है हिन्दी राजभाषा को सहज रूप में आत्मसात् करने और इसकी समृद्धि में योगदान देने का।

यह पत्रिका हिन्दी के सहज और शाश्वत प्रवाह में सहयोगी बने तथा निरंतर अपने प्रगति पथ पर गतिमान रहे इस हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

अवनीन्द्र

(अवनीन्द्र कुमार शर्मा)

उप महालेखाकार - प्रशासन एवं ए.एम.जी.- IV
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तरप्रदेश, प्रयागराज



संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'तरंग' का 143-144वाँ संयुक्तांक प्रकाशित होने जा रहा है। कार्यालय की यह पत्रिका कार्मिकों के मनोभाव को व्यक्त करने के साथ ही साथ सकारात्मक उर्जा का पुंज भी है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम हिन्दी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस दौर में हिन्दी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। उन्होंने कहा था, 'जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिन्दी है।'

मातृ भाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।'

राजभाषा पत्रिका 'तरंग' के इस अंक के प्रकाशन में अपना योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मैं धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ और आशा करता हूँ कि कार्यालय की यह पत्रिका अपने उन्तुंगता के शिखर पर होगी तथा राजभाषा के विकास में अपना अमूल्य योगदान देती रहेगी।

हिन्दी पत्रिका 'तरंग' के सफल प्रकाशन एवं उद्देश्यपूर्ण प्रगति के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

श्रेयांश

(श्रेयांश सिंह)

उप महालेखाकार - ए.एम.जी.-II एवं ए.एम.जी.-III
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम)
उत्तरप्रदेश, प्रयागराज



संपादक की कलम से....



प्रिय साथियों,

मनुष्य के लिए ज्ञान प्राप्त करने के दो प्रमुख तरीके हैं, प्रत्यक्ष रूप से तथा अप्रत्यक्ष रूप से। प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया तो व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है, किंतु व्यक्ति अप्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करने हेतु पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं अथवा इलेक्ट्रानिक उपकरणों आदि को माध्यम बनाता है।

अप्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करने में संप्रेषण कौशल का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। यह एक द्विमार्गीय प्रक्रिया है। संप्रेषण की सहायता से ही हम अपने विचारों, सूचनाओं, मान्यताओं तथा अन्य जानकारीयों को दूसरों के साथ बाँटते हैं। संप्रेषण में सूचना के स्रोत एवं सूचना प्राप्त करने वाले के मध्य आदान-प्रदान होता है, जिससे ज्ञान की वृद्धि होती है। इस प्रकार सूचना एवं संप्रेषण दोनों ही ज्ञान प्राप्त करने और ज्ञान प्राप्ति के ढंग को जानने एवं समझने के लिए आवश्यक होते हैं। इसी कड़ी में तरंग का यह नवीन अंक विभिन्न विषयों एवं तकनीकी आलेखों के माध्यम से और सूचना के प्रवाह को आप तक पहुँचाने में सहायक है। यह हमें कार्यालय तथा हिन्दी कार्यान्वयन संबंधी अद्यतन सूचनाएं उपलब्ध कराने के साथ ही रचनाकारों का अनुभव और ज्ञान भी पाठकों तक पहुंचाता है।

आपके द्वारा भेजी गई रचनाओं / लेखों को हमने आवश्यक संशोधन के पश्चात आपकी तस्वीर के साथ प्रकाशित करने का सिलसिला जारी रखा है। आपकी रचनाओं ने इस पत्रिका को बेहतर बनाया है, जिस हेतु आप धन्यवाद के पात्र हैं। कृपया अपनी ओर से उत्कृष्ट लेख, कवितायें, अनुभवों एवं यात्रा वृत्तांत आदि को भेजने का सिलसिला इसी प्रकार जारी रखें ताकि पत्रिका को और भी बेहतर बनाया जा सके।

मुझे विश्वास है कि तरंग पत्रिका का यह नूतन अंक आपकी अपेक्षाओं व आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं इसे और भी रुचिकर बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का सहर्ष स्वागत है। तरंग पत्रिका के इस नूतन अंक को मूर्त रूप देने में सम्मिलित संपादक मण्डल के सभी सदस्यों, रचनाकारों तथा कार्यालय के समस्त कार्मिकों के प्रति उनके सहयोग हेतु मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

रा. कुमर

राजेश कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
❶ खण्ड-1 : प्रगति प्रतिवेदन			
1.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का संक्षिप्त परिचय		15 - 16
2.	उच्च शिक्षा के परिणामों की निष्पादन लेखापरीक्षा		17 - 20
3.	अनुपालन लेखापरीक्षा - I		20 - 23
4.	हिन्दी की वार्षिक प्रगति		24
❷ खण्ड-2 : कार्मिकों की अभिव्यक्ति			
1.	आर्थिक प्रगति के 76 वर्ष एक संक्षिप्त परिचय	दक्ष चतुर्वेदी	26 - 27
2.	हास-परिहास "घर की होम मिनिस्ट्री"	दिलीप कुमार सिंह	28 - 30
3.	हिन्दी माह की गाथा	जान्हवी राय	30
4.	नारी ही तो हूँ	जान्हवी राय	30
5.	प्रयागराज का इतिहास	नील श्रीवास्तव	31 - 32
6.	भौतिकतावाद एवं अभौतिकतावाद का संगम	शाहिल पथिक	33
7.	स्वतंत्रता दिवस	गोपाल कुमार	34
8.	कन्यादान	गोपाल कुमार	34
9.	कविता	आलोक राय	35
10.	हमारी हिन्दी	मो. शहनवाज अंसारी	35
11.	मेहनत के फल का महत्व	ईशा कुशवाहा	36
12.	आज का कूड़ा	अंबरीष श्रीवास्तव	37
13.	सड़क निर्माण में कारगर प्लास्टिक अपशिष्ट	हेमंत शर्मा	38 - 39
14.	दोहे	रमाकांत शर्मा	39
15.	तंजावुर का 'बृहदेश्वर मंदिर' - एक अद्भुत कलाकृति	प्रिया सिंह तोमर	40 - 43
16.	खेल का महत्व	अमर काला	44
17.	मेरी मैराथन दौड़	मनीष मिश्रा	45 - 46

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
18.	कविता	प्रवीण कुमार कक्कड़	46
19.	'असुरक्षित नारी'	राजीव श्रीवास्तव	47
20.	योग से बनें निरोग	विनय कुमार गुप्ता	48 - 49
21.	दो चाँद	कुमार सौरभ	49
22.	स्मृति के पन्नों से...	लक्ष्मीकान्त	50 - 51
23.	कविता	सुमन केसरी	51
24.	'योग अपूर्णता से सम्पूर्णता की ओर'	वान्यगंगवार	52 - 55
25.	पुलकित जीवन, तन, मन, उपवन वर्षा ऋतु	तबस्सुम नकवी	55
26.	नज़्म	अमित कुमार 'खामोश'	56
27.	मानसिक सुख और सन्तोष	अनुष्का श्रीवास्तव	57 - 58
28.	'ईमानदारी और स्वाभिमान'	हरिकेश सिंह 'सूर्यवंशी'	59 - 60
29.	"स्वच्छता ही नारा"	हरिकेश सिंह 'सूर्यवंशी'	60

➤ **खण्ड-3 : कार्यालय की गतिविधियां**

1.	हिन्दी पखवाड़ा	62
2.	सतर्कता जागरुकता सप्ताह	63
3.	ऑडिट दिवस	64
4.	गणतंत्र दिवस समारोह	65 - 66
5.	खेल किट वितरण समारोह	67
6.	अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	68
7.	अंगदान दिवस	68
8.	सेवानिवृत्ति कार्यक्रम	69
9.	स्वतंत्रता दिवस समारोह	70

➤ **सेवानिवृत्त कार्मिकों की सूची**

71

➤ **स्मृतिशेष**

72



भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 1

प्रगति प्रतिवेदन

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) का संक्षिप्त परिचय

मार्च 01, 1984 से भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों को अलग-अलग लेखापरीक्षा एवं लेखा एवं हकदारी कार्यालयों में पुनर्गठित किया गया था। इस प्रकार महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-1 और महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-2 के कार्यालय उसी तिथि से अस्तित्व में आए। महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-1 का कार्यालय पुराने परिसर में लेखा एवं हकदारी कार्यालयों के साथ स्थित था। जनवरी 1996 में लेखापरीक्षा कार्यालयों को सत्यनिष्ठा भवन में स्थानांतरित कर दिया गया। महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के कार्यालय को अगस्त 2002 में प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के कार्यालय में उच्चिकृत किया गया और सितंबर 2004 से इसका नाम बदलकर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा) कर दिया गया। उत्तर प्रदेश राज्य के पुनर्गठन और उत्तराखंड राज्य के निर्माण के परिणामस्वरूप, 2004 में कैडर का पृथक्करण हुआ। 10.06.2006 को इन दोनों राज्यों के बीच लेखापरीक्षा और लेखा व्यवस्था को पुनर्गठित करने के लिए प्रधान महालेखाकार (सिविल लेखापरीक्षा) के प्रशासनिक और तकनीकी नियंत्रण के अन्तर्गत वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय) का एक अलग कार्यालय जुलाई 2004 में मुख्यालय द्वारा बनाया गया था।

मुख्यालय द्वारा कार्यालय आदेश क्रमांक 109. एस. एम. यू. पी. पी. / पुनर्गठन/ 5-2011 दिनांक 27 मार्च 2012 द्वारा निर्देश दिया गया कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सिविल ऑडिट), उत्तर प्रदेश, अब उत्तर प्रदेश सरकार के सामाजिक और सामान्य सेवा विभागों का प्रधान लेखापरीक्षक होगा और इसे कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश कहा जाएगा। स्थानीय निकायों के लेखापरीक्षा और लेखा से संबंधित सभी तकनीकी मार्गदर्शन और सहायता कार्य और कर्तव्य भी इस कार्यालय द्वारा निष्पादित किए जाएंगे। कार्यालय वरिष्ठ उप महालेखाकार (स्थानीय निकाय लेखापरीक्षा एवं लेखा) को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश में विलय कर दिया गया और कार्यालय में उप महालेखाकार के पद को प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश के कार्यालय में स्थानांतरित कर दिया गया।

कार्यालय महालेखाकार (वाणिज्यिक एवं प्राप्ति लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश सरकार के आर्थिक सेवा विभागों का प्रधान लेखापरीक्षक होगा और अब से इसे महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) का कार्यालय कहा जाएगा। इस विषय के सभी पिछले आदेशों का अतिक्रमण कर दिया गया।

मुख्यालय ने कार्यालय आदेश संख्या 108 एसएमयू पी पी पुनर्गठन/ 5-2011 दिनांक 27 मार्च 2012 के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार और झारखंड राज्यों में स्थित सभी केंद्र सरकार इकाइयों (स्वायत्त निकाय सहित) की सभी प्राप्तियों एवं व्यय के लेखापरीक्षा के लिए इलाहाबाद और पटना में शाखा कार्यालयों के साथ लखनऊ में प्रधान निर्देशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का एक नया कार्यालय खोलने का निर्देश दिया।

मुख्यालय ने अधिसूचना संख्या 110/09- एस. एम. यू. 2020 दिनांक 15 मई 2020 के माध्यम से निर्देश दिया कि एस एम यू की अधिसूचना संख्या 59/31- एस.एम.यू/ 2018 दिनांक 09/03/2020 में निहित नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के आदेशों को ध्यान में रखते हुए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा), उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद को अब से प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - प्रथम) के कार्यालय के रूप में जाना जाएगा।

उत्तर प्रदेश के कार्यालयों प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) प्रयागराज, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय) उ.प्र. लखनऊ एवं प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ में कार्यरत समूह 'ए' (वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी), समूह 'बी' और समूह 'सी' कर्मचारियों संबंध में कैडर नियंत्रण प्राधिकारी प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) उ.प्र. हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार के राजस्व अनुभाग की अधिसूचना सं. 78/2018/1698/1-5-2018-72/2017 दिनांक 23.11.2018. द्वारा मुख्यालय ने पुराने नाम 'इलाहाबाद' के स्थान पर परिवर्तित नाम 'प्रयागराज' के प्रयोग को अनुमति दे दी। इलाहाबाद में स्थित लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अंतर्गत सभी कार्यालय भी इसके बाद अपने सभी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, पत्र शीर्ष, वेबसाइट आदि में परिवर्तित नाम 'प्रयागराज' का प्रयोग करेंगे।

मुख्यालय ने कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) उत्तर प्रदेश, प्रयागराज और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय) उत्तर प्रदेश, लखनऊ के बीच निम्नानुसार क्लस्टर आवंटित किए हैं:-

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) उत्तर प्रदेश, प्रयागराज	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-द्वितीय) उत्तर प्रदेश, लखनऊ
<ol style="list-style-type: none"> 1. स्वास्थ्य एवं कल्याण 2. शिक्षा, कौशल विकास और रोजगार 3. ग्रामीण विकास 4. कृषि, खाद्य एवं संबद्ध उद्योग 5. जल संसाधन 6. शहरी विकास 7. कानून एवं व्यवस्था 8. सामान्य प्रशासन 	<ol style="list-style-type: none"> 1. ऊर्जा और शक्ति 2. उद्योग और वाणिज्य 3. परिवहन 4. पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी 5. लोक निर्माण विभाग 6. वित्त 7. सूचना प्रौद्योगिकी और संचार 8. संस्कृति एवं पर्यटन

समूह अधिकारियों के प्रभार को लेखापरीक्षा प्रबंधन समूह ए.एम.जी.) कहा जाएगा। समूहों प्रभार के बीच क्लस्टर का वितरण इस प्रकार है:-

लेखापरीक्षा - प्रथम, प्रयागराज		लेखापरीक्षा - द्वितीय, लखनऊ	
ए.एम.जी.-I	ग्रामीण विकास	ए.एम.जी.-I	वित्त
ए.एम.जी.-II	शिक्षा, कौशल विकास एवं रोजगार	ए.एम.जी.-II	ऊर्जा एवं शक्ति, आईटी एवं संचार
ए.एम.जी.-III	कृषि, खाद्य एवं संबद्ध इंडस्ट्रीज, जल संसाधन	ए.एम.जी.-III	उद्योग एवं वाणिज्य, परिवहन, संस्कृति एवं पर्यटन
ए.एम.जी.-IV	शिक्षा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण	ए.एम.जी.-IV	पर्यावरण, विज्ञान - प्रौद्योगिकी एवं लोक निर्माण विभाग
ए.एम.जी.-V	शहरी विकास, सामान्य प्रशासन, कानून एवं व्यवस्था		

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (प्रतिवेदन संख्या 6 वर्ष 2022)

उच्च शिक्षा के परिणामों की निष्पादन लेखापरीक्षा

उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में मार्च 2020 में राज्य में 18 राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालय थे। राज्य में 170 शासकीय महाविद्यालय, 331 अशासकीय सहायता प्राप्त महाविद्यालय एवं 6.682 स्ववित्त पोषित निजी महाविद्यालय इन विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध थे। वर्ष 2019-20 में 90.61 लाख विद्यार्थी इन महाविद्यालयों में नामांकित थे। उच्च शिक्षा विभाग द्वारा वर्ष 2014-20 की अवधि में रु. 13.848 करोड़ व्यय किया गया जो कि राज्य के कुल व्यय का 0.56 प्रतिशत (2015-16) तथा 0.76 प्रतिशत (2014-15) था। वर्ष 2014-20 के दौरान व्यय राज्य के सकल घरेलू उत्पाद का 0.15 प्रतिशत से 0.19 प्रतिशत था।

उच्च शिक्षा के परिणामों की निष्पादन लेखापरीक्षा अवधि 2014-19 को सम्मिलित करते हुए वर्ष 2019-20 के दौरान सम्पादित की गयी थी तथा अगस्त 2021 में इसे वर्ष 2019-20 हेतु अद्यतन किया गया था। दो विश्वविद्यालय- महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के साथ इन विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध 10 महाविद्यालय विस्तृत लेखापरीक्षा हेतु चयनित किये गये थे। राज्य में उच्च शिक्षा की पहुँच तथा समता के साथ उच्च शिक्षा की गुणवत्ता का आकलन किया गया था। अभिशासन तथा प्रबंधन के विषय जो कि सुधार हेतु इन सभी कारकों में महत्वपूर्ण हैं को भी आकलित किया गया था। यह प्रतिवेदन ऐसे क्षेत्रों जिनमें प्रणालीगत संशोधनों तथा सुधार की आवश्यकता है, की पहचान करने का उद्देश्य रखता है।

वर्ष 2019-20 की अवधि में राज्य का सकल नामांकन अनुपात अखिल भारतीय औसत (27.10 प्रतिशत) के सापेक्ष कम (25.30 प्रतिशत) था। कोई भी राज्य विश्वविद्यालय / महाविद्यालय भारत के 100 सर्वोच्च उच्च शिक्षण संस्थानों में सम्मिलित नहीं था। वर्ष 2018-19 में राज्य के मात्र 8.47 प्रतिशत (498 उच्च शिक्षण संस्थान) राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) ग्रेडिंग से श्रेणीबद्ध थे जो 2019-20 में और भी घटकर 260 प्रतिशत (183 उच्च शिक्षण संस्थान) रह गये। इनमें से केवल 29 उच्च शिक्षण संस्थानों (0.40 प्रतिशत) को ए ग्रेडिंग से मान्यता प्राप्त थी।

उच्च शिक्षा विभाग के प्रशासनिक नियंत्रणाधीन राज्य विश्वविद्यालयों निजी विश्वविद्यालयों शासकीय महाविद्यालयों एवं अशासकीय सहायता प्राप्त महाविद्यालयों की संख्या वर्ष 2016-17 से स्थिर थी। तथापि स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों की संख्या वर्ष 2016-17 में 5377 से बढ़कर वर्ष 2019-20 में 6,682 हो गयी थी। पाँच जनपदों में कोई भी शासकीय महाविद्यालय नहीं था एवं दूसरे पाँच जनपदों में पुरुष या सह-शिक्षा के शासकीय महाविद्यालय नहीं थे। अग्रेत्तर 20 जनपदों में कोई भी शासकीय या अशासकीय सहायता प्राप्त बालिका महाविद्यालय नहीं थे। नामांकन स्तर वर्ष 2015-16 में 94.88 लाख से वर्ष 2019-20 में 90.61 लाख की सतत गिरावट प्रदर्शित कर रहा था। प्रति महाविद्यालय औसत नामांकन घटक 2015-16 में 1.830 विद्यार्थियों से 2019-20 में 1.261 विद्यार्थी रह गया था।

विश्वविद्यालय / महाविद्यालय खोलने की कोई स्पष्ट नीति राज्य के पास नहीं थी। तथापि निजी प्रबंधन द्वारा असेवित क्षेत्रों में ऐसे विकास खण्डों जिनमें एक भी महाविद्यालय नहीं थे को प्राथमिकता देने के मानदण्ड के साथ नये महाविद्यालयों को खोलने की एक योजना क्रियान्वित की जा रही थी। वर्ष 2014-17 के दौरान 90 ऐसे महाविद्यालय के अनुमोदन के विपरीत मार्च 2020 तक केवल 12 के द्वारा अध्ययन के विभिन्न पाठ्यक्रमों में सम्प्राप्त की गयी थी।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (विश्वविद्यालय द्वारा कॉलेजों की सम्बद्धता) विनियम 2009 में विशिष्ट प्राविधान के बावजूद नमूना जांच विश्वविद्यालयों (महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी एवं लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ) द्वारा उनसे सम्बद्ध निजी महाविद्यालयों के शुल्क संरचना का अनुमोदन नहीं किया गया था। नमूना जाँच की गयी संस्थाओं की लेखापरीक्षा में देखा गया कि नियमित एवं स्ववित्त पोषित पाठ्यक्रमों के वर्ष 2014-20 के दौरान छात्रों से लिये गये शुल्क में भारी मात्रा में अंतर था। राज्य सरकार द्वारा कार्यकारी आदेश से निर्धारित शिक्षण शुल्क का अनुपालन नमूना जाँच की गयी उच्च शिक्षण संस्थाओं द्वारा नहीं किया गया था।

लेखापरीक्षा में देखा गया कि वर्ष 2017-20 के दौरान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के 73 से 80 प्रतिशत एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के 56 से 67 प्रतिशत विद्यार्थी समाज कल्याण विभाग द्वारा प्रदत्त दशमोत्तर छात्रवृत्ति से लाभान्वित हुये थे।

वर्ष 2019-20 के दौरान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ एवं लखनऊ विश्वविद्यालय में क्रमश केवल 29 प्रतिशत एवं 17 प्रतिशत कक्षाएँ सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) सक्षम थी। तथापि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय छात्रों को ई-संसाधन तक पहुँच उपलब्ध करा रहे थे।

नई शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के दौरान शासन द्वारा पाठ्यक्रम का डिजाइन एवं विषय पर पर्याप्त कार्य किया गया तथा शैक्षणिक सत्र 2021-22 से चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली लागू की गयी है। वर्ष 2014-20 के दौरान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ एवं लखनऊ विश्वविद्यालय में रोजगारपरकता पर केन्द्रित कार्यक्रमों का औसत प्रतिशत क्रमश 21 प्रतिशत एवं 10 प्रतिशत था।

निर्धारित छात्र शिक्षक अनुपात 201 के विपरीत शासकीय महाविद्यालयों में वर्ष 2019-20 के दौरान 49:1 था। वर्ष 2014-20 के दौरान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में औसतन 19 प्रतिशत तथा लखनऊ विश्वविद्यालय में औसतन 16 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया गया।

वर्ष 2014-15 से 2019-20 (वर्ष 2018-19 को छोड़कर) तक महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में विभिन्न पाठ्यक्रमों के परिणाम 273 दिनों तक विलम्बित थे। मांगे जाने के बाद भी वर्ष 2014-17 के दौरान परिणामों की घोषणा से सम्बन्धित सूचना लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा लेखापरीक्षा को उपलब्ध नहीं करवायी गयी। जैसा कि लेखापरीक्षा में विश्लेषित किया गया वर्ष 2017-20 के दौरान लखनऊ विश्वविद्यालय में परिणाम 175 दिनों तक विलम्बित थे।

वर्ष 2017-20 के दौरान बहुत कम छात्रों (0.15 प्रतिशत) ने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में पुनर्मूल्यांकन के लिए आवेदन किया था, तदपि औसतन 90 प्रतिशत छात्रों के अंकों में पुनर्मूल्यांकन से वृद्धि हुई। अग्रेतर, वर्ष 2017-20 के दौरान महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में सुधार परीक्षा में औसतन 27 प्रतिशत प्रपत्रों में अंकों में वृद्धि हुई। लखनऊ विश्वविद्यालय में सुधार परीक्षा में सभी छात्रों (2.783) के अंकों में वृद्धि हुई।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ एवं लखनऊ विश्वविद्यालय में अनुसंधान परियोजनाएँ 1.463 दिनों तक के विलम्ब से पूर्ण हुई। कुछ बिना किसी परियोजना परिणाम के (अपरिपक्व) बंद कर दी गयीं। नमूना जांच किये गये विश्वविद्यालयों में पेटेंट प्रदान किया जाना तथा परामर्श देना शून्य था।

वर्ष 2014-20 के दौरान विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालय से बाहर उच्च शिक्षा के लिए जाने वाले अथवा उसी विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा के लिए प्रयत्न करने वाले छात्रों के आंकड़े अनुरक्षित नहीं थे।

सदस्यों के पदों के खाली रहने तथा आवश्यक बैठकों की कमी के कारण विश्वविद्यालयों में शासी निकाय रूप से क्रियाशील नहीं थे। आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आईक्यूएसी) की स्थापना महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में (अप्रैल 2010) तथा लखनऊ विश्वविद्यालय (दिसम्बर 2016) में हुई थी। तदपि, महाविद्यालयों में आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन समिति के कार्यकलाप के अनुश्रवण हेतु राज्य स्तरीय गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ का गठन नहीं किया गया था तथा स्थापना हेतु निर्णय शासन स्तर पर विचाराधीन था (जुलाई 2022)।

मार्च 2020 तक महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध क्रमशः 341 तथा 171 महाविद्यालय पूर्वी उत्तर प्रदेश के पांच जनपदों तथा लखनऊ जनपद में फैले हुए थे। नमूना जाँच किये गये महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के 28 स्व-वित्त पोषित महाविद्यालयों में से 18 सम्बद्धता के चार से 29 प्रतिशत मानक भी पूर्ण नहीं करते थे। सम्बद्ध महाविद्यालयों का निरीक्षण नहीं किया गया था। पर्याप्त अवसंरचना न रखने वाले महाविद्यालयों की अस्थाई सम्बद्धता को विस्तारित किया गया था। महाविद्यालयों को सम्बद्धता के मानक में छूट से शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा केन्द्रांश को सम्मिलित करते हुए राज्यात राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के राज्य परियोजना निर्देशक को 1636 दिनों के विलम्ब तक निर्गत किया गया था। महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ एवं लखनऊ विश्वविद्यालय उनके द्वारा अर्जित राजस्व से अपने व्यय को पूर्ण करने में आत्म निर्भर नहीं थे तथा शासकीय अनुदान पर निर्भर थे।

- अनुशंसा 1** : उत्तर प्रदेश में वर्ष 2030 तक लक्षित सकल नामांकन अनुपात 40 प्रतिशत प्राप्त करने हेतु राज्य सरकार द्वारा उन जनपदों में जहाँ कमी है, अधिक महाविद्यालयों की स्थापना से उच्च शिक्षा तक पहुँच सुनिश्चित करना चाहिए।
- अनुशंसा 2** : सभी महाविद्यालयों में गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए राज्य सरकार द्वारा शासकीय महाविद्यालयों में निर्धारित आधारभूत अवसंरचना उपलब्ध कराना चाहिए तथा सम्बद्ध निजी महाविद्यालयों में अवसंरचना एवं आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता विश्वविद्यालयों द्वारा सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- अनुशंसा 3** : उच्च शिक्षा को वहन करने योग्य बनाने हेतु निजी महाविद्यालयों के शुल्क ढांचा को राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालयों द्वारा विनियमित किया जाना चाहिए।
- अनुशंसा 4** : पाठ्यक्रमों का समय से संशोधन सुनिश्चित किया जाना चाहिए तथा रोजगारपरकता पर केन्द्रित पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
- अनुशंसा 5** : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालयों को शासकीय महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में निर्धारित छात्र शिक्षक अनुपात को बनाये रखना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- अनुशंसा 6** : व्यक्तिगत एवं संस्थागत उत्कृष्टता हेतु शिक्षकों के कार्य में सुधार एवं सतत विकास हेतु राज्य सरकार तथा विश्वविद्यालयों द्वारा नियमित रूप से प्रासंगिक व्यवसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए तथा यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी शिक्षक इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागिता करें।
- अनुशंसा 7** : परीक्षा प्रणाली तथा परिणाम घोषणा में विलम्ब का गहन अनुभवण किया जाय।

- अनुशंसा 8 :** परियोजनाओं के गहन अनुश्रवण से विश्वविद्यालयों / राज्य सरकार द्वारा अनुसंधान की गुणवत्ता व समयबद्धता सुनिश्चित की जाय।
- अनुशंसा 9 :** राज्य सरकार / विश्वविद्यालयों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्लेसमेंट प्रकोष्ठ तथा आजीविका परामर्शी प्रकोष्ठ समस्त उच्च शिक्षण संस्थाओं में गठित हो।
- अनुशंसा 10 :** उच्च शिक्षण संस्थाओं द्वारा उच्च अध्ययन तथा छात्रों के नौकरी प्राप्त करने से सम्बन्धित आंकड़ों के एकत्रीकरण तथा अनुरक्षण की मजबूत प्रणाली स्थापित की जानी चाहिए।
- अनुशंसा 11 :** राज्य एवं विश्वविद्यालयों के शासी निकायों में रिक्तियों को प्राथमिकता के आधार पर भरा जाना चाहिए।
- अनुशंसा 12 :** विश्वविद्यालयों को सम्बद्धता प्रक्रिया को मजबूत करना चाहिए जिससे केवल सभी नियामक आवश्यकताओं का पालन करने वाले महाविद्यालयों को ही सम्बद्धता प्रदान किया जाना सुनिश्चित हो।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का प्रतिवेदन (प्रतिवेदन संख्या 1, वर्ष 2023)

अनुपालन लेखापरीक्षा-I

31 मार्च 2021 को समाप्त हुए वर्ष के लिए

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के 31 मार्च 2021 को समाप्त हुये वर्ष के लिये इस प्रतिवेदन में निम्नलिखित अध्याय सम्मिलित हैं:

अध्याय-I: प्रस्तावना

अध्याय-II: (i) प्रयागराज विकास प्राधिकरण के आवासीय एवं निर्माण गतिविधियों की लेखापरीक्षा;

(ii) विभिन्न शासकीय विभागों से संबंधित लेखापरीक्षा प्रस्तर

अध्याय-1: प्रस्तावना

उत्तर प्रदेश सरकार के 58 विभागों के साथ 392 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) और 806 अन्य संस्थाओं (शहरी स्थानीय निकाय पंचायतीराज संस्थाओं / स्वायत्त निकायो/प्राधिकरणों) की लेखापरीक्षा प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तर प्रदेश के लेखापरीक्षा क्षेत्राधिकार के अंतर्गत आती है। वर्ष 2019-21 के दौरान 6.192 लेखापरीक्षा योग्य इकाइयों के सापेक्ष 1.305 इकाइयों की अनुपालन लेखापरीक्षा संपादित की गयी इस प्रतिवेदन में प्रयागराज विकास प्राधिकरण की आवासीय एवं निर्माण गतिविधियों की लेखापरीक्षा तथा 13 विभागों से संबंधित 16 अनुपालन लेखापरीक्षा प्रस्तर शामिल हैं।

लेखापरीक्षा के आग्रह पर वसूली

लेखापरीक्षा में विदित हुआ (अप्रैल 2021) कि राप्ती नहर निर्माण खण्ड-2 तुलसीपुर बलरामपुर ने एक ठेकेदार के बिलों से वसूल करने के बजाय सरकारी धन से लेबर सेस के रूप में रु.4.96 करोड़ का भुगतान किया। लेखापरीक्षा में इंगित किये जाने पर ठेकेदार से लेबर सेस की संपूर्ण राशि रु.4.86 करोड़ की वसूली (मार्च 2022) कर ली गयी थी।

अध्याय 11: लेखापरीक्षा निष्कर्ष

प्रयागराज विकास प्राधिकरण के आवासीय एवं निर्माण गतिविधियों की लेखापरीक्षा (प्रस्तर 21)

प्रयागराज विकास प्राधिकरण के आवासीय एवं निर्माण गतिविधियों की लेखापरीक्षा उत्तर प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश शहरी नियोजन और विकास अधिनियम 1973 के अन्तर्गत प्रयागराज विकास प्राधिकरण (पीडीए) की स्थापना (1074) की भी पीडीए का उद्देश्य अन्य बातों के साथ-साथ योजना के अनुसार प्रयागराज शहर के विकास को बढ़ावा देना और सुरक्षित करना है और उस उद्देश्य के लिए पीडीए पास भूमि और अन्य संपत्ति का अधिग्रहण धारण प्रबंधन और निपटान करने की शक्ति है। इसको पूरा करने के लिए पीडीए शहरी आबादी को किफायती आवास उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न आवास योजनाओं को क्रियान्वित करता है और मुख्य रूप से सिविल और विद्युत कार्यों से सम्बन्धित विभिन्न निर्माण गतिविधियों को निभाता है। लेखापरीक्षा 2016-17 से 2020-21 की अवधि के लिए की गयी। महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा निष्कर्ष इस प्रकार हैं:

पीडीए उत्तर प्रदेश शहरी नियोजन एवं विकास अधिनियम 1973 के अन्तर्गत आवश्यक प्रयागराज के 12 में से 11 क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय योजना तैयार करने में विफल रहा। इस प्रकार प्रयागराज के 11 क्षेत्रों में विकास गतिविधियों को अपेक्षित क्षेत्रीय योजना की उपलब्धता के बिना किया जा रहा था।

2016-17 से 2020-21 की अवधि के दौरान आवास योजनाओं पर पीडीए का व्यय रु.10473 करोड़ से घटकर रु.17.56 करोड़ (83 प्रतिशत) हो गया, जबकि अन्य विकास कार्यों पर व्यय रु.63.27 करोड़ से बढ़कर रु.70.23 करोड़ (11 प्रतिशत) हो गया, जो आवास कार्यों के अतिरिक्त अन्य कार्यों, जैसे सड़क कार्य शुभ मेला कार्य, स्मार्ट सिटी कार्य आदि के निष्पादन को पीडीए द्वारा वरीयता दिये जाने को दर्शाता है।

पीडीए ने बिना किसी मांग का सर्वेक्षण किए 1,200 बहुमंजिला फ्लैटों के निर्माण के लिए यमुना विहार आवास योजना शुरू की। तदुपरान्त मांग के अभाव में दो टावरों (192 फ्लैट) के निर्माण के बाद परियोजना का निर्माण कार्य छोड़ दिया गया। परिणामस्वरूप अधूरे टावरों के बेसमेंट स्टिल्ट फर्श चहारदीवारी आदि के निर्माण पर रु.38.85 करोड़ का व्यय निष्फल रहा। अग्रेतर 192 में से 160 फ्लैट अविक्रीत रह गए। इसी प्रकार रु.152.92 करोड़ की लागत वाले 357 फ्लैट अविक्रीत थे जिनका निर्माण अप्रैल 2018 (मौसम विहार) और नवंबर 2019 (जागृति विहार) में किया गया था।

कार्य में धीमी प्रगति के कारण पीडीए ने गोविंदपुर आवास योजना के अन्तर्गत अलकनंदा अपार्टमेंट के आवंटियों को कब्जा देने की नियत तिथि से पाँच वर्ष से अधिक समय व्यतीत जाने के बाद भी कब्जा प्रदान नहीं किया।

पीडीए ने समाज के कमजोर वर्गों निम्न आय वर्ग के लोगों और शहरी गरीबों को किफायती मूल्य पर आवास उपलब्ध कराने के लिए प्रधान मंत्री आवास योजना के अन्तर्गत 32.500 आवास इकाइयों के निर्माण के लक्ष्य के सापेक्ष केवल 312 आवास इकाइयों का निर्माण किया।

पीडीए ने टाउनशिप के लिए अपेक्षित अनुमोदन के बिना और तत्काल आवश्यकता के बिना प्रस्तावित टाउनशिप की परिधीय सड़कों के निर्माण पर रु.438 करोड़ का अनियमित व्यय किया। एक अन्य सड़क कार्य में बिटुमिनस कार्य के लिए तेल कम्पनियों द्वारा जारी अपेक्षित प्रेषण रसीद प्रमाण पत्र प्राप्त किये बिना एक ठेकेदार को रु.187 करोड़ का अनियमित भुगतान किया गया।

लेखापरीक्षा प्रस्तर

बेसिक शिक्षा विभाग

बेसिक शिक्षा विभाग एवं कार्यदायी संस्था (उत्तर प्रदेश राजकीय निर्माण निगम) के उदासीन प्रवृत्ति के कारण 10 वर्षों की अवधि व्यतीत होने के उपरान्त भी आजमगढ़ जनपद में दो कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय के भवनों का निर्माण अपूर्ण रहा जिससे 117 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। इसके अतिरिक्त इस विलम्ब के कारण आवासीय विद्यालय ब्लाक रिसोर्स सेंटर भवन आजमगढ़ के ट्रांजिट परिसर से संचालन किये जाने हेतु बाध्य थे जिससे बालिकाओं को मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। (प्रस्तर 22)

उच्च शिक्षा विभाग

निर्माण कार्य के निष्पादन में शिथिलता एवं निधियों को अवमुक्त किये जाने में विलम्ब के कारण दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में स्पोर्ट्स स्टेडियम का निर्माण सात वर्ष व्यतीत होने के उपरान्त भी अपूर्ण रहा। परिणामस्वरूप इसके निर्माण पर रु. 24.61 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के छात्रों को खेल का बुनियादी ढाँचा प्रदान किये जाने का उद्देश्य प्राप्त नहीं किया जा सका (प्रस्तर 23)

गृह विभाग

कार्य के आरम्भ होने में विलम्ब अप्रभावी अनुश्रवण एवं पुनरीक्षित आगणन की स्वीकृति में विलम्ब के परिणामस्वरूप बैफल फायरिंग रेंज का कार्य अपूर्ण रहा। इसके अतिरिक्त निर्माण पर हुए रु.5.81 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा तथा कार्य की लागत भी रु.241 करोड़ से बढ़कर 26.39 करोड़ हो गयी (प्रस्तर 24)

सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग

सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग, शारदा नहर खण्ड लखनऊ द्वारा पाथ एम्फीबियस हाइड्रोलिक एक्टर्स की आपूर्ति हेतु उत्तर प्रदेश प्रोजेक्ट कार्पोरेशन लिमिटेड को 29109 लाख सेंटेंज की धनराशि का अनियमित भुगतान किया गया। (प्रस्तर 25)

अनुबन्ध की शर्तों का उल्लंघन करते हुए सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग बाढ़ खण्ड बरेली द्वारा ठेकेदार को रामगंगा बैराज के कार्यों में डिवाटिंग शुल्क हेतु रु.33.66 करोड़ का अधिक भुगतान किया गया। (प्रस्तर 26)

राप्ती नहर निर्माण खण्ड-2 द्वारा अनुबंध के प्रावधानों का उल्लंघन करते हुए ठेकेदार को रु.20 करोड़ का ब्याज मुक्त मशीनरी अग्रिम भुगतान किया गया जिससे राज्य सरकार को रु. 25.14 करोड़ के ब्याज की हानि हुई। (प्रस्तर 2.7)

गोमती रिवरफ्रंट विकास परियोजना के लिए अपूर्ण प्राक्कलन के आधार पर आयातित म्यूजिकल फाउंटेन स्थापित करने में विफलता के परिणामस्वरूप रु.49.59 करोड़ का निष्फल व्यय हुआ। (प्रस्तर 28)

सिंचाई एवं जल संसाधन विभाग द्वारा बिना सर्वेक्षण के परियोजना के निर्माण के कारण किच्छा-पहा फीडर नहर में साइफन की पुनर्स्थापना पर रु.2.70 करोड़ का निष्फल व्यय (प्रस्तर 29)

चिकित्सा शिक्षा विभाग

शासकीय आदेश के विरुद्ध बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज गोरखपुर द्वारा बचत बैंक खाता के स्थान पर चालू खातों के संचालन के परिणामस्वरूप रु.1.62 करोड़ के ब्याज की हानि (प्रस्तर 210)

चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग

जिला स्वास्थ्य समितियों द्वारा कर्मचारी भविष्य निधि अंशदान के विलम्ब से प्रेषण के कारण कर्मचारी भविष्य निधि संगठन द्वारा लगाए गए ब्याज क्षति एवं कर्मचारी अंशदान वसूली के कारण रु.3.25 करोड़ का परिहार्य भुगतान किया जाना (प्रस्तर 211)

21 जिलों के मुख्य चिकित्सा अधिकारियों / मुख्य अधीक्षकों ने सातवें वेतन आयोग का नि के परिणामस्वरूप 175 चिकित्सा अधिकारियों का गलत तरीके से उच्च वेतन निर्धारित किया जिसके परिणामस्वरूप रु.2.59 करोड़ का अधिक भुगतान हुआ। लेखापरीक्षा में इंगित किये जाने पर चार मुख्य चिकित्सा अधिकारियों ने 12 चिकित्सा अधिकारियों से रु.20.64 लाख की वसूली की। (प्रस्तर 2.12)

कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाएं विभाग

परियोजना के निरूपण / गठन एवं मूल्यांकन स्तर पर उदासीन दृष्टिकोण अपनाये जाने और समय पर कार्य पूर्णता सुनिश्चित करने में विभाग की विफलता के कारण जिला कारागार मीरजापुर की चहारदीवारी का निर्माण कार्य इसकी स्वीकृति के 11 वर्ष बाद भी अपूर्ण रहा एवं उसके निर्माण पर किया गया रु.21.42 करोड़ व्यय अलाभकारी रहा। (प्रस्तर 2:13)

समाज कल्याण विभाग

प्रतिशत प्रभार की अनुमन्यता के शासकीय आदेशों का उल्लंघन कर समाज कल्याण विभाग द्वारा कार्यदायी एजेंसी को रु.2 करोड़ का अधिक भुगतान किया जाना। (प्रस्तर 2:14)

प्राविधिक शिक्षा विभाग

मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा नगर निगम गोरखपुर को गृहकर के भुगतान में शिथिलता के परिणामस्वरूप गृहकर के बकाए पर रु.3.08 करोड़ के ब्याज का परिहार्य भुगतान (प्रस्तर 2.15)

शहरी विकास विभाग

कर्मचारी भविष्य निधि और विविध प्रावधान अधिनियम 1952 के अंतर्गत कर्मचारी भविष्य निधि अंशदान की कटौती एवं समय पर निधि में भुगतान के सम्बंध में वैधानिक उत्तरदायित्व का पालन करने में नगर पालिका परिषद की विफलता के परिणामस्वरूप कर्मचारियों के अंशदान ब्याज एवं क्षतिपूर्ति के रूप में रु.1.49 करोड़ का परिहार्य भुगतान हुआ (प्रस्तर 2.16)

व्यावसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास विभाग तथा अल्पसंख्यक कल्याण एवं वक्फ विभाग

विस्तृत प्राक्कलन बनाये जाने में लापरवाही पूर्ण अभिवृत्ति एवं राज्य सरकार द्वारा पुनरीक्षित प्राक्कलन की स्वीकृति में सात वर्षों से अधिक का विलम्ब किये जाने के कारण औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान किठौर, मेरठ के निर्माण पर रु.5 करोड़ का व्यय अलाभकारी रहा। (प्रस्तर 2.17)

हिन्दी की वार्षिक प्रगति

राजभाषा विभाग द्वारा जारी विभिन्न (क, ख, एवं ग) क्षेत्रों में स्थित कार्यालयों के लिए हिन्दी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्यालय निरंतर प्रयासरत है। हम राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी पत्राचार, हिन्दी टिप्पणी एवं हिन्दी में किए जाने वाले अन्य कार्यों हेतु प्रदत्त लक्ष्यों की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। वर्ष 2022-23 के दौरान कार्यालय द्वारा किए गए पत्राचार में हिन्दी की भागीदारी करीब 98.93 प्रतिशत रही तथा कार्यालय में हिन्दी टिप्पणी का योगदान लगभग 96.32 प्रतिशत रहा।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का भी नियमित रूप से आयोजन किया जा रहा है। प्रधान महालेखाकार महोदय की अध्यक्षता में आयोजित उक्त बैठकों में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए तथा उनका अनुभाग स्तर से अनुपालन भी सुनिश्चित किया गया।

इसके अतिरिक्त राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार कार्यालय प्रमुख द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप हिन्दी अनुभाग द्वारा कार्यालय के विभिन्न अनुभागों का निरीक्षण किया गया एवं हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी सुझाव भी प्रेषित किए गए। विभिन्न अनुभागों द्वारा अपने अधिकतम कार्य राजभाषा में किए जाने पर निरीक्षण दल द्वारा संतुष्टि भी व्यक्त की गयी।

राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाले हिन्दी पखवाड़े के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, हिन्दी टिप्पणी एवं मसौदा पत्र लेखन प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिन्दी ज्ञान संबंधी विभिन्न प्रतियोगिताएँ / क्विज प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की जाती हैं। हिन्दी पखवाड़े को कार्यालय में उत्सव का स्वरूप प्रदान करते हुये कार्यालय के कार्मिकों की सहभागिता ऊर्जा प्रदान करने वाली होती है। पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किया जाता है।

उपरोक्त के अतिरिक्त, कार्यालय में हिन्दी की प्रगति सुनिश्चित करने हेतु मुख्यालय स्तर से प्राप्त दिशानिर्देशों के अनुरूप कार्यवाही सुनिश्चित की जा रही है। 'क' क्षेत्र से संबन्धित होने के कारण हिन्दी की प्रगति में इस कार्यालय का उत्तरदायित्व और भी वृहद है तथा इसके निर्वहन हेतु हम सभी निरंतर प्रयासरत भी हैं।

‘हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।’

—मैथिलीशरण गुप्त



भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 2

कार्मिकों की अभिव्यक्ति

आर्थिक प्रगति के 76 वर्ष एक संक्षिप्त परिचय

दृक्ष चतुर्वेदी

छात्र-सेंट जोसफ कॉलेज

पुत्र श्री अनुज कुमार चतुर्वेदी

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी



भारत को आज़ाद हुए 76 वर्ष हो चुके हैं। हमने अपने देश के उतार-चढ़ाव को देखा है और उससे सीखा भी है। आज हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि पिछले 76 सालों में हमने कई सफलताएं प्राप्त की हैं। इन अनेक उपलब्धियों में से एक आर्थिक उपलब्धि है। आज हमने इंग्लैंड को, जिसने हमारे ऊपर लगभग 200 वर्षों तक राज किया, अर्थव्यवस्था की दौड़ में पछाड़ कर पांचवां स्थान प्राप्त किया है। लेकिन क्या यह यात्रा हमारे लिए सरल थी? यह जानने के लिए हमें इतिहास में थोड़ा पीछे जाना होगा।

1947 में जब भारत आज़ाद हुआ, तब परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं। अंग्रेज हमारे देश से काफी मात्रा में संसाधन ले जा चुके थे। देश का विभाजन हो चुका था जिसके कारण सामाजिक और आर्थिक वृद्धि के अवसर काफी हद तक घट चुके थे। आज़ादी के पश्चात भारत के सामने आर्थिक चुनौतियाँ थीं, जैसे आर्थिक पाबंदियाँ, आर्थिक प्रोत्साहन न होना, धीमी विकास दर आदि। इसी समय वर्ष 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना का जन्म हुआ। इन योजनाओं के निर्माण के लिए योजना आयोग की स्थापना की गयी। नेत्र प्रथम पंचवर्षीय योजना ने कृषि क्षेत्र को बढ़ावा देने और संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने का कदम उठाया क्योंकि हमारे देश की बहुसंख्य आबादी इसी पर निर्भर थी। परन्तु इसके बावजूद हमें कम उत्पादकता, वित्त की कमी और कई अकालों का सामना करना पड़ा। इन परिस्थितियों पर काबू पाने के लिए वर्ष 1967 में भारत में हरित क्रान्ति की शुरुआत हुई। इस क्रान्ति ने आधुनिक तकनीक, आधुनिक औजारों, उर्वरक, अधिक उत्पादन वाले बीजों, और आधुनिक सिंचाई के तरीकों को प्रोत्साहन दिया जिसके कारण अनाज के उत्पादन जैसे चावल व गेहूँ में भारी वृद्धि देखने को मिली और 60 के दशक में चावल का कुल उत्पाद 2 टन प्रति हेक्टेयर से 90 के दशक में 6 टन प्रति हेक्टेयर तक बढ़ा और लगभग अगले चालीस वर्षों में (1980-2021) चावल का कुल उत्पादन 5.36 करोड़ टन से बढ़कर 12 करोड़ टन हुआ। ठीक उसी प्रकार गेहूँ की फसल में हमें पिछले 30 वर्षों में 71 फीसदी की वृद्धि देखने को मिली। वर्तमान में भारत चावल और गेहूँ का विश्व में चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन चुका क्षेत्र है। कृषि क्षेत्र के विकास के कारण आज हमने बागवानी और कार्बनिक कृषि की दुनियां में भी सफलता की प्राप्ति की है। वर्तमान में भारत ने बागवानी में 32 करोड़ टन का उत्पादन किया है जो संपूर्ण देश के अनाज के उत्पादन से भी अधिक है।

यद्यपि पंचवर्षीय योजना कृषि क्षेत्र के लिए लाभदायी साबित हुई, परन्तु सेवा व औद्योगिक क्षेत्र में हमें बहुत कम वृद्धि देखने को मिली। इसके कई कारण थे जैसे अकुशल श्रम, राजनैतिक अस्थिरता, सोवियत संघ का दूटना, पश्चिम का इराक पर हमला जिसके कारण तेल के दामों में बढ़ोत्तरी हुई, लाइसेंस राज, विदेशी मुद्रा की कमी से कम होना और कठोर आर्थिक नीतियाँ। सरकार की कठोर आर्थिक नीतियाँ व बाज़ार पर पाबंदियों के कारण 80 के दशक में विशाल कंपनियाँ जैसे कोका कोला और आई.बी.एम. भारत छोड़ के चली गईं। फिर 80 के दशक की समाप्ति तक भारत के पास संसाधन कम हो गए और विदेशी मुद्राएँ भी। हमारे पास कुछ दिन के आयात के लिए ही मुद्राएँ बची थीं। वहीं दूसरी तरफ विश्व अब

उदार आर्थिक नीतियों की ओर बढ़ रहा था। हम अब लम्बे समय तक खेती का सहारा नहीं ले सकते थे। विश्व टेक्नोलॉजी की ओर कदम बढ़ा रहा था और हमें इस अवसर का फायदा उठाना था। इन संकेतों को देखते हुए सरकार ने एक कड़ा फैसला लेते हुए भारत की अर्थव्यवस्था को दूसरे देशों के साथ जोड़ने का कदम उठाया जिसके बदौलत 90 के दशक में संरचनात्मक परिवर्तन हुए। विदेशी कंपनियों ने भारत में अपने कारोबार शुरू किये जिससे विदेशी निवेश का दर बढ़ गया। बहुत सी नीतियों जैसे सीमित उद्योगों को लाइसेंस देना, विदेशी निवेश की सीमा का कम होना, कड़े कानून, आदि में बदलाव किये गए जिसके कारण विदेशी कंपनियों का भारत में कारोबार करना और सरल हो गया। सन 1992 के बाद, औद्योगिक और सेवा के क्षेत्र में बहुत तेज़ी से विकास हुआ। औद्योगिक क्षेत्र में विकास के कारण सेवा क्षेत्र को भी बढ़ावा मिला। इन क्षेत्रों में बढ़ोत्तरी को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1992 से भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्र (स्पेशल इकनॉमिक ज़ोन) को बढ़ावा मिला जिनके वित्तीय कानून हमारे देश के दूसरे इलाकों से अलग थे जिसके कारण इन क्षेत्रों में कारोबार करना काफी सरल बनाया। बाहर से आई कंपनियों को लेखांकन व सॉफ्टवेयर सेवा की आवश्यकता भी बढ़ी। इन आवश्यकताओं के कारण भारत में आई.टी. और बी.पी.ओ. क्षेत्र का परिचय हुआ। आज भारत पूरे विश्व के 56 प्रतिशत बी.पी.ओ. परियोजनाओं को संभालता है। इससे संबंधित उद्योग जैसे प्रशिक्षण और भर्ती सेवा, खानपान, प्रबंधन कंपनियाँ, सुरक्षा एजेंसियों, आदि को फायदा हुआ। इन सेवाओं के कारण आज हम हैदराबाद, गुरुग्राम, चेन्नई, पुणे, नॉएडा और बेंगलुरु जैसे शहरों में भारी मात्रा में निवेश देख सकते हैं। वित्तीय वर्ष 2022 में देश की कुल जीडीपी के 7.4 प्रतिशत में आई.टी. और बी.पी.ओ. क्षेत्र का योगदान रहा। आई.टी. क्षेत्र ने लाखों रोजगार पैदा किये जिसके परिणामस्वरूप दवाइयों, गाड़ियों के पुर्ज व गाड़ियों का निर्माण, पर सॉफ्टवेयर, बैंकिंग, और अन्य सेवाओं के क्षेत्रों में आर्थिक बढ़ोत्तरी हुई।

उदारीकरण ने देश को एक टिकाऊ आर्थिक वातावरण दिया। यह कई कारणों से संभव हो पाया जैसे कि टैक्स का कम होना, आयात शुल्क को कम करना, भारतीय रूपए के मूल्य को घटाना इत्यादि। इन योजनाओं ने देश को एक व्यापार अनुकूल माहौल दिया जिससे विदेशी कंपनियों (फाक्सकोन, शाओमी, सैमसंग, विवो और पेगाट्रान आदि जैसे बड़े उत्पादक) के भारत में आने के अतिरिक्त स्वदेशी कंपनियों में भी विदेशी निवेश हुआ। परिणामस्वरूप आज भारत में कुल 108 यूनिकॉर्न कम्पनियाँ हैं, जोकि विश्व में तीसरा स्थान ग्रहण करती हैं। इसके कारण आज देश की सराहनीय आर्थिक वृद्धि हो रही है जो लाखों लोगों को रोज़गार में मदद कर रही है। यह कहना उचित होगा कि बढ़ता युवा कार्यबल और इस कार्यबल का अंग्रेजी में प्रवाहमय होने के कारण आज हमें हैदराबाद, बेंगलुरु, नोएडा और गुरुग्राम जैसे शहरों में सॉफ्टवेयर में लेखांकन, बैंकिंग, प्रबंध, व सॉफ्टवेयर में सेवा उपलब्ध कराने वाली कंपनियां के कार्यालय देखने को मिलते हैं। यह उल्लेखनीय है कि आर्थिक वृद्धि के कारण गरीबी दर में गिरावट भी देखने को मिली। विश्व बैंक के अनुसार, अत्यंत गरीबी का दर 2011 में 22.5 प्रतिशत से घट कर 2019 में 10.2 प्रतिशत हो गया।

भारत ने अपने आर्थिक जीवन में कई उतार चढ़ाव, आपदाएं, और समस्याओं सामना किया है और आज उसका फल हमें देखने को मिल रहा है। आज़ादी से अबतक, देश में हमने कई बदलाव देखे हैं। इनमें से सबसे सराहनीय आर्थिक व अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों और रूपरेखाओं में कई लाभदायी बदलाव हैं। आज हम दुनिया कि पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके हैं और आने वाले पांच वर्षों में हम तीसरे स्थान पर आ जायेंगे। हमें इसके लिए उत्तम नीतियां, समान विकास दर, भारतीय रूपए का स्थिर रहना, और अंत में सबके सहयोग की आवश्यकता होगी।

हास-परिहास

“घर की होम मिनिस्ट्री”

दिलीप कुमार सिंह
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी



“क्यों जी! रोज-रोज कहते हो खाना ऐसा बना है, खाना वैसा बना है..... आज चख कर बताओ खाना कैसा बना है?” ऑफिस से घर लौटते ही पत्नी हम पर चढ़ बैठी थी। हम समझ गये कि आज पत्नी ने कुछ खास बनाया है... डाइनिंग टेबल पर पहुँच कर हमने भोजन की थाली देखी... अहा! सब्जी का लुक ही बड़ा धाँसू था.... और खुशबू के क्या कहने! हमने चेयर पर बैठते हुये नथुनों में लम्बी साँस भरी.... और ताबड़तोड़ पहला कौर मुँह में डाला..... “वाह! क्या मस्त सब्जी है... मज़ा आ गया आज तो... बहुत दिनों के बाद ऐसी स्वादिष्ट सब्जी बनाई हो.... इच्छा तो हो रही है तुम्हारा हाथ चूम लूँ”..... पत्नी की तारीफ में हम आगे और भी कुछ कह पाते.... इससे पहले ही पत्नी के चेहरे की भाव-भंगिमा बदल गई..... उसने साड़ी का पल्लू कमर में लपेट कर खोंसा.... एक हुँकार भरी और लपक कर एक धौल हमारे पीठ पर धर दिला.... फलस्वरूप मुँह का कौर वापस थाली के हवाले हो गया। पत्नी की आँखों से चिंगारियाँ फूट रही थीं.... “रोज-रोज मर-मर के सड़ी गर्मी में खाना बनाती हूँ.... तो ऐसा बना है.... वैसा बना है”.... “हुँह”! पत्नी ने टेढ़ा सा मुँह बनाया.... आज पड़ोसन के हाथ की बनी सब्जी परोस दी तो कहने ही क्या! ज़नाब हाथ तक चूमने को तैयार हो गये... अरे जल्दी जाओ.... जाकर गले से लगा लो.... करमजले.... मेरे तो भाग ही फूट गये”.... पत्नी बिलबिलाते हुये छाती पीट रही थी... इधर हमारी दशा तो साँप-छछूंदर वाली हो रही थी.... उसके बाद मित्रों! आँधी आई... तूफान आया... जलजला आया... और सैलाब में सब कुछ तबाह हो गया। हम समझ चुके थे कि मामले का ऊँट हथ्थे से उखड़ चुका है सो किसी भी करवट बैठेगा नहीं। हम यह भी अन्दाजा लगा चुके थे कि पत्नी ने आज मन ही मन हमें तीन तलाक भी बोल दिया होगा।

लेकिन वो वाली कहावत है न दोस्तों! जहाँ चाह वहाँ राह। हमने भी घर में बने शीत-युद्ध वाले माहौल को बदल डालने की ठान ली। होम मिनिस्ट्री को पटरी पर लाने के लिये अगले ही दिन हम बाजार से मटर और पनीर टाँग लाये। हमारी घर वाली इसकी सब्जी बड़े प्रेम से... और एकदम लजीज़ बनाती है। हमें यकीन था कि इसे देखने के बाद उसका फूला हुआ मुँह अपने मूल आकार में आ जायेगा। परन्तु यह क्या! जब हम खाना खाने बैठे.... तो सामने थाली में था करेला.... “करेला!” हमारे मुँह से मरी-मरी आवाज़ में निकला और मुँह भी करेले सा हो गया। हम तो मटर-पनीर का मूड बनाये बैठे थे..... सोचा था खाते समय पत्नी की तारीफ में ऐसे-ऐसे पुल बाँधेंगे.... जैसे अभी तक किसी इंजीनियर ने बनाये न हों.... पर यहाँ तो पत्नी ने हमें ही अच्छे से बना दिया था.... पत्नी को प्रसन्न करने की हमारी योजना तहस-नहस हो चुकी थी। हमने डरते-डरते धीरे से पत्नी की ओर निहारा.... वो कमर पर दोनों ओर हथेली टिकाये, बाल बिखराये फुँफकारती हुई चट्टान सी अडिग खड़ी थी।.... “अब। ठूसते क्यों नहीं!” पत्नी गुर्गई.... झपटकर हमने करेले को रोटी के साथ मुँह के हवाले किया.... और कनखियों से पत्नी की ओर देखा.... उसने आँखे चौड़ी करके हमें कस के घूर दिया.... हम सकपका गये दोस्तों! सच बतायें.... करेले में पनीर का स्वाद आ गया था।

लेकिन वो कहते हैं न! कि मियाँ-बीवी की रार-तकरार पानी का बुलबुला होती है....फूटते देर नहीं लगती। सावन के महीने में जब पवन ने शोर किया.... घटाओं ने झकझोर किया.... तो पत्नी बोली, "ओ मोरे पिया! एक ठो बढ़िया सी झक्कास साड़ी दिलाय देओ ना!.... हम पिघल गये.... और बरसात हो गई.... मतलब हम साड़ी के शो-रूम में पत्नी सहित जा गिरे....पत्नी ने जाते ही जड़ दिया, "एक बिल्कुल अलग टाइप की 'यूनीक' साड़ी दिखाओ".... दुकानदार बोला, "काउन्टर पर आओ...."। दोस्तों! पत्नी ने सचमुच लीक से हट के एक साड़ी चुनी.... और पहनकर जब ट्रायल-रूम से बाहर आई तो मारे खुशी के फूली नहीं समा रही थी.... इठलाते हुये बोली, "देखो जी! कैसी लग रही हूँ?" सचमुच वो साड़ी उस पर बहुत जँच रही थी....साड़ी पर छोटे-छोटे ढेर सारे हवाई जहाज प्रिन्ट थे। हम पूरी तल्लीनता के साथ पत्नी को निहार रहे थे कि पत्नी ने टोका, "क्या जी! ऐसे क्या देख रहे हो? कभी हवाई जहाज नहीं देखा क्या?" हम पत्नी की ओर इशारा करते हुये मुस्कुराये, "हवाई जहाज तो हमने बहुतेरे देखे हैं.... पर इतना बड़ा हवाई-अड्डा आज पहली बार देख रहे हैं।"

पत्नी छनछना गई.... समझ गई उसके मोटापे पर कटाक्ष है बोली, "घर चलो.... फिर बताती हूँ।"

दोस्तों! उस दिन फिर घर में बादल गरजे, तूफान आया और झनक-झनक-झन-झड़पन-झड़पन हुआ.... होना ही था।

एक दिन की बात बतायें.... छुट्टी का दिन था.... पत्नी बोली, "ऑफिस में अधिकारियों के इशारों पर नाचते हो तो सेलरी मिलती है.... अब घर पर मेरे इशारे पर नाचो तब ही खाना मिलेगा।" हम चौंके, "ब्लैकमेल कर रही हो?" "अरे, नहीं-नहीं" वो मुस्कुराई, "ये तो सीधे-सीधे व्हाइट मेल है.... अगर खाना चाहिये तो नाचो।" हमने हथियार डाल दिये, "चलो, तुम्हारे इशारे पर भी नाच लेते हैं.... बताओ क्या करें!" "वही तो कह रही हूँ.... नाचो!" पत्नी के चेहरे पर हँसी थी....और हमारी जान आफत में फँसी थी...."मतलब नाचें!" "हाँ भई! शादी-बारात में तो खूब उछलते हो.... चलो नाचो!" मरता क्या ना करता.... नाचे.... वो भी अच्छे से। पत्नी ने वीडियो क्लिपिंग कर ली....हम गिड़गिड़ाये, "देखो, अपने यू-ट्यूब चैनल पर मत डाल देना वरना मेरी बड़ी किरकिरी हो जायेगी.... पर वो पत्नी ही क्या जो मान जाय.... हसीना होती तो मान जाती.... उसने अपलोड कर दिया....हमारा डाँस वायरल हो गया.... ऑफिस में भी लोग कहने लगे "यार! दिलीप भाई, मजा आ गया!" कोई हमारे दिल से पूछता तो हम बताते कि पत्नी को उस डिप्रेशन से बचाने के लिये ये सब भी करना पड़ता है जो कि हमारे पारिवारिक कठिन समस्याओं के कारण होता रहता है जिसका वर्णन फिर कभी करेंगे।

एक दिन हम ऑफिस से घर लौटे.... अन्दर घुसे ही थे कि पत्नी ने ऊँगली के इशारे से हमें अपनी ओर बुलाया.... हम पास गये, "बोलो, किसलिये बुलाई हो?" वो इठलाई.... बोली, "कुछ नहीं.... बस ऊँगली की ताकत आजमा रही थी.... अब जाओ।" हम मन ही मन भुनभुनाये.... यहाँ ऊँगली कर-कर के लोगों ने पूरे देश को हिला रखा है और एक ये है कि ऊँगली की ताकत आजमाने में लगी है। पत्नी ने पीछे से पुकारा, "अरे हाँ, एक बात तो मैं कहना भूल ही गई।" हम पलट पड़े, "बोलो! कोई इच्छा अधूरी न रह जाये मन में प्राण ले लो जो है हमारे तन में।"

पत्नी ने पैंतरा भांजा, "एक हफ्ते बाद करवा चौथ आ रहा है.... बोलो, तुम्हें क्या चाहिये?"

"हमें क्या चाहिये, मतलब?" हम चौंके।

"मतलब ये.... प्राण नाथ! कि अगर सही-सलामत जिन्दगी बिताना चाहते हो तो ठीक है.... वरना ये व्रत पति के दीर्घायु होने से सीधे-सीधे सम्बद्ध है।"

“यानि कि?” हमने अपनी शंका जाहिर की।

“जी हाँ! बिल्कुल ठीक समझे”....पत्नी के चेहरे पर तीखी मुस्कान नाच रही थी.... “इधर हमने व्रत बीच में तोड़ा.... उधर तुम खल्लास।”

“जी!” पत्नी ने हुँकार भरी.... “और हाँ! जिन्दगी चाहते हो तो फटाफट मेरे लिये कान के झुमके लेकर आओ....देरी मत करो.... झटपट जाओ।”

हमें लगा.... अब, अगर हमने देरी की.... तो हमारे लाईफ इन्श्योरेन्स की पॉलिसी को कुकड़ू-कू होने से कोई नहीं बचा सकता.... दोस्तों! जान प्यारी थी.... पत्नी दुलारी थी.... जिम्मेदारी बहुत सारी थी.... भाग कर गया.... कान के झुमके ले आया.... तो मित्रों! हमारे घर की होम-मिनिस्ट्री की हर अदा पर हम कदम-कदम पर फिदा हैं.... जोर से बोलो! जय पत्नी की!

हिन्दी माह की गाथा

चैत माह की सुनो, कहानी, राम जन्म हुआ सबने जानी।
वैशाख में फसल काटते, बैसाखी त्योहार मनाते।
जेठ को तपते सब ने देखा, आषाढ़ माह में वर्षा की आशा।
सावन में हरियाली छाई, रिमझिम-रिमझिम बरखा आई।
भादो की तो बात निराली, गरजें बादल चमके बिजली।
क्वार माह में सूरज तपता, सिर के ऊपर तवा सा जलता।
महीना कार्तिक का जब आया, हल्की-हल्की सर्दी लाया।
धान काट कर घर लाते, दिवाली-त्यौहार मनाते।
अगहन में दिन होते छोट, आग ताप कर ठंड भगाते।
पौष माह में थरथर कापें, दिन छोटे और लंबी रातें।
माघ महीना जब है आता, सर्दी थोड़ी कम कर जाता।
फाल्गुन का महीना जब आए, संग में होली की खुशियाँ लाए।
रंग खेलते गुझियां खाते, मिलकर गले त्यौहार मनाते।



जाह्वी देय
(लिपिक)

नारी ही तो हूँ

मैं हूँ कुछ....और....कुछ नहीं भी हूँ।
धुंधली सी तस्वीर में, बहती नदी सी हूँ।
मैं हूँ कभी पार्वती....तो कभी काली हूँ।
मैं हूँ तुलसी आँगन की, तो झाँसी की रानी भी हूँ।
मैं हूँ वो गृहणी, जो संजो के रखती है घर अपना....
देश की रक्षा करने वाली रक्षक भी हूँ।
बनी मैं कभी द्रौपदी तो कभी सती भी हूँ....
एक शिक्षक भी है मुझमें और मैं जीवन दाता भी हूँ
हर ज़र्रे में हूँ, पर ज़रा सी हूँ....
नमक की तरह ज़ायका भी हूँ....
कुछ भी तो नहीं!
बस एक साधारण सी नारी ही तो हूँ।

प्रयागराज का इतिहास

नील श्रीवास्तव

स.ले.प.अ./हिन्दी



प्रयागराज शहर उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े शहरों में से एक है और तीन नदियों - गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित है। मिलन बिंदु को त्रिवेणी के रूप में जाना जाता है और यह हिंदुओं के लिए विशेष रूप से पवित्र है। आर्यों की पहले की बस्तियां इस शहर में स्थापित की गई थीं, जिसे तब प्रयाग के नाम से जाना जाता था।

‘प्रयागस्य प्रवेशशु पापम नश्वती तक्षनम’

प्रयाग में प्रवेश से सभी पाप साफ हो जाते हैं।

प्रयागराज गौरवशाली अतीत और वर्तमान के साथ भारत के ऐतिहासिक और पौराणिक शहरों में से एक है। यह हिंदू, मुस्लिम, जैन और ईसाइयों की मिश्रित संस्कृति का शहर है।

पुराण, रामायण और महाभारत में इसके संदर्भ से इसकी पवित्रता प्रकट होती है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, त्रिमूर्ति के निर्माता भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि की शुरुआत में पवित्र यज्ञ करने के लिए पृथ्वी (यानि प्रयाग) पर एक भूमि को चुना और उन्होंने इसे तीर्थ राज या सभी तीर्थ केंद्रों के राजा के रूप में भी संदर्भित किया। इसी तरह प्रयाग सभी तीर्थ स्थानों में सबसे अच्छा है। प्रयाग में स्नान का उल्लेख ब्रह्म पुराण में मिलता है - प्रयाग में गंगा यमुना के तट पर माघ मास में होने वाले स्नान से लाखों-करोड़ों अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

प्रयाग सोम, वरुण और प्रजापति का जन्म स्थान है। प्रयाग ब्राह्मणवादी (वैदिक) और बौद्ध साहित्य में पौराणिक व्यक्तित्वों से जुड़ा रहा है। यहाँ महान ऋषि भारद्वाज, ऋषि दुर्वासा और ऋषि पन्ना व ऋषि भारद्वाज मुनी निवास करते थे, जो लगभग 5000 ईसा पूर्व यहाँ रहते थे और 10000 से अधिक शिष्यों को पढ़ाते थे। वह प्राचीन दुनिया के सबसे महान दार्शनिक थे।

वर्तमान झूंसी क्षेत्र, संगम के बहुत करीब चंद्रवंशी (चंद्र वंश) राजा पुरुरवा का राज्य था। प्राचीन वस्तुओं का सबसे पुराना स्मारक अशोक स्तंभ तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के शिलालेखों के साथ अपने साथी राजाओं के लिए उनके निर्देशों और राजा समुद्रगुप्त की प्रशंसा के शिलालेखों को साफ करता है। 643 ई. में चीनी यात्री हुआन त्सांग ने प्रयाग को कई हिंदुओं द्वारा बसाया गया जो इस जगह को बहुत पवित्र मानते थे।

1575 ई. - सम्राट अकबर ने 'इलाहाबास' के नाम से शहर की स्थापना की, जो बाद में इलाहाबाद बन गया, जिसका अर्थ है 'अल्लाह का शहर' वह संगम के रणनीतिक महत्व से प्रभावित था। मध्ययुगीन भारत में इस शहर ने भारत के धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्र होने का सम्मान प्राप्त किया। लंबे समय तक यह मुगलों की प्रांतीय राजधानी थी। बाद में इस पर मराठों ने कब्जा कर लिया।

1801 ई. - शहर का ब्रिटिश इतिहास इस वर्ष में शुरू हुआ जब अवध के नवाब ने इसे ब्रिटिश सिंहासन को सौंप दिया। ब्रिटिश सेना ने अपने सैन्य उद्देश्यों के लिए किले का इस्तेमाल किया।

- 1857 ई.** - यह शहर स्वतंत्रता के युद्ध का केंद्र था और बाद में अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का केन्द्र बन गया।
- 1858 ई.** - ईस्ट इंडिया कंपनी ने आधिकारिक तौर पर मिंटो पार्क में भारत को ब्रिटिश सरकार को सौंप दिया। स्वतंत्रता के पहले युद्ध के बाद इस शहर का नाम 'इलाहाबाद' रखा गया था और इसे आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत की राजधानी बनाया गया था।
- 1866 ई.** - जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय की स्थापना हुई तो यह न्याय का स्थान बन गया।
- 1871 ई.** - ब्रिटिश वास्तुकार सर विलियम एमर्सन ने कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल को डिजाइन करने से तीस साल पहले एक राजसी स्मारक ऑल सेंट कैथेड्रल का निर्माण किया था।
- 1887 ई.** - चौथे सबसे पुराने विश्वविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ प्रयागराज ज्ञान का केंद्र बन गया। प्रयागराज भारतीय स्थापत्य परंपराओं के साथ संश्लेषण में बनाई गई कई विक्टोरियन और जॉर्जियाई इमारतों में समृद्ध रहा है।

यह शहर ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र था, जिसका केंद्र आनंद भवन था। प्रयागराज (तब इलाहाबाद के नाम से जाना जाता था) में महात्मा गांधी ने भारत को आजाद कराने के लिए अहिंसक प्रतिरोध का अपना कार्यक्रम प्रस्तावित किया था। प्रयागराज ने स्वतंत्रता के बाद भारत के सबसे अधिक प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, वीपी सिंह प्रदान किए हैं। पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे।

प्रयागराज मूल रूप से एक प्रशासनिक और शैक्षिक शहर है। उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश के महालेखा परीक्षक का कार्यालय, प्रधान रक्षा लेखा नियंत्रक (पेंशन) पीसीडीए का कार्यालय, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) कार्यालय, पुलिस मुख्यालय और शिक्षा में मोती लाल नेहरू क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेज एम.एन.आई.टी., मेडिकल एंड एग्रीकल्चर कॉलेज, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.आई.टी.) आदि प्रमुख संस्थायें स्थित हैं।

कुंभ मेले की उत्पत्ति 8 वीं शताब्दी के दार्शनिक शंकर से हुई है, जिन्होंने चर्चा और बहस के लिए विद्वान तपस्वियों की नियमित सभाओं की स्थापना की थी। कुंभ मेले का संस्थापक मिथक - पुराणों (मिथक और किंवदंती के संग्रह) के लिए जिम्मेदार है - बताता है कि कैसे देवताओं और राक्षसों ने अमृत के बर्तन (कुंभ) पर लड़ाई लड़ी, जो सागर के संयुक्त मंथन से उत्पन्न अमरता का अमृत था। संघर्ष के दौरान, अमृत की बूंदें कुंभ मेले के चार विभिन्न सांसारिक स्थलों पर गिर गईं, और माना जाता है कि नदियाँ प्रत्येक मेले के अंतिम क्षण में उस आदिम अमृत में बदल जाती हैं, जिससे तीर्थयात्रियों को पवित्रता, शुभता और अमरता के सार में स्नान करने का मौका मिलता है। कुंभ शब्द अमृत के इस पौराणिक बर्तन से आता है। प्रयाग में प्रत्येक वर्ष माघ मेले के साथ 6 वर्षों पर कुम्भ एवं 12 वर्षों पर महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। जिसमें दूर-दराज से लाखों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं।

प्रयागराज शिक्षा, ज्ञान और लेखन का केंद्र रहा है। यह भारत का सबसे जीवंत, शैक्षणिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक रूप से जागृत शहर है।

भौतिकतावाद एवं अभौतिकतावाद का संगम

शाहिल पथिक
लेखा परीक्षक



वर्तमान वैश्विक परिवेश को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि मानव जाति को अब संस्कृति के कुछ विशिष्ट मूल बिन्दुओं को अपने जीवन में अनिवार्यतः अंगीकृत करना होगा। 'संस्कृति वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता कानून रीति रिवाज और समाज के सदस्य के रूप में मानव द्वारा अर्जित की गयी अन्य क्षमतायें और आदतें शामिल हैं। (टायलर एडवर्ड बनेड, 'प्रिमिटिव कल्चर', 1871, इ०)

प्रत्येक संस्कृति चाहे वह किसी भी कालखंड की गोद से उत्पन्न हुयी हो कुछ अति विशिष्ट अनुष्ठानों के माध्यम से अपनी मूल आधारभूत प्रकृति की छाप मानव जाति पर छोड़ती रहती है तथा कुछ विशिष्ट संदेशों को प्रसारित करती है। उदाहरण स्वरूप यदि कुम्भ मेले का मौलिक निरीक्षण करें तो ज्ञात होता है कि मानव वैदिक हो या आधुनिक इस प्रकार के वृहद् अनुष्ठानों ने सदैव मानव सभ्यता को भौतिकतावाद से अभौतिकतावाद की तरफ देखने को विवश करते हुए शून्य पर ला कर खड़ा किया है।

एक ऐसा अनुष्ठान जो विशिष्ट तिथियों पर अपनी परिधि का विस्तार करता है। एक ऐसी परिधि जिसमें सम्पूर्ण विश्व समाहित हो जाता है। किन्तु विभिन्न विविधताओं को समेटते हुए करोड़ों भक्तों को एक सूत्र में बाँध सकने का सामर्थ्य शायद किसी अन्य धार्मिक अनुष्ठान में नहीं है। सदैव जलमग्न रहने वाला भू-भाग एक अस्थाई नए धार्मिक शहर में परिवर्तित हो जाता है, जिसके वातावरण में मंत्रोच्चारण से वह सम्पूर्ण क्षेत्र एक धार्मिक स्थल बन जाता है, शास्त्रार्थ का स्थल बन जाता है, जिस स्थल पर बुद्धिजीवियों के ज्ञान के संगम से मानव जाति को जीवन के संकीर्ण विषयों से परे मानवता पर विचार करने हेतु नए प्रश्न मिल जाते हैं, यह सोचने पर विवश कर देता है कि जीवन के मौलिक मूल्यों में किस पक्ष की महत्ता ज्यादा है ? यह जीवन भौतिकतावाद में लिप्त हो कर नष्ट करने योग्य है या नए आयामों की खोज करने का एक सुनहरा अवसर।

मानव सदैव अपनी प्रकृति के अनुरूप ऊर्ध्वगामी विकास की तरफ अग्रसर होता है किन्तु जितना महत्वपूर्ण ऊर्ध्वगामी विकास है उतना ही जरूरी निम्नगामी आंतरिक विकास भी। ऐसे अनुष्ठान, उन लुप्त हो चुके विचारों को जागृत करते हैं जिसमें निम्नगामी आंतरिक विकास को मानव भुला चुका है। वैभवशाली जीवन की आवश्यकता शायद मानव जाति की सबसे बड़ी वासना है किन्तु यह वैभवता आंतरिक है या बाह्य इस प्रश्न पर अब विचार करना ही होगा।

स्वतंत्रता दिवस

नमन है उन वीरों को जिन्होंने इस देश को बचाया,
गुलामी की मजबूत बेड़ियों को,
अपने बलिदान के रक्त से पिघलाया,
और भारत माँ को आजाद है कराया,

15 अगस्त, 1947 को भारत के इतिहास को स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया। इसी दिन देश के आजाद होने पर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले पर झंडा फहराया था। तभी से प्रत्येक वर्ष देश के प्रधानमंत्री लाल किले पर झंडा फहराते हैं, राष्ट्रगान गाते हैं और सभी शहीद स्वतंत्रता सेनानियों को 21 तोपों से श्रद्धांजलि दी जाती है। देश के प्रधानमंत्री हर साल देशवासियों को अपने भाषा के द्वारा सम्बोधित करते हैं और सेनायें अपना शक्ति प्रदर्शन और परेड मार्च दिखाते हैं। स्वतंत्रता दिवस के दिन सभी भारतवासियों के मन में देश भक्ति की भावना के साथ-साथ पूर्ण जोश रहता है। आजादी के बाद भारत देश अब तक बहुत उन्नति कर चुका है। 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के दिन सभी विद्यालय कॉलेज, संस्थान, बाजार, कार्यालय और कारखाने आदि बन्द रहते हैं। इस दिन सरकारी छुट्टी होती है। जगह-जगह पर झंडा फहराया जाता है। स्कूलों कॉलेजों आदि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें सभी छात्र-छात्राएं भाग लेते हैं और देश भक्ति के गीत गाते हैं, कोई कविता सुनाता है तो कोई सांस्कृतिक गीतों पर नृत्य करता है। 15 अगस्त भारत देश के गर्व और सौभाग्य का दिवस है। यह पर्व हमारे हृदय में नवीन स्फूर्ति, नवीन आशा, उत्साह तथा देश भक्ति का संचार करता है। स्वतंत्रता दिवस हमें इस बात की याद दिलाता है कि हमने कितनी कुर्बानियां देकर यह आजादी प्राप्त की है, जिसकी रक्षा हमें हर कीमत पर करनी है। चाहे हमें इसके लिये अपने प्राणों का त्याग क्यों न करना पड़े। इस प्रकार हम स्वतंत्रता दिवस के पर्व को पूर्ण उत्साह, उमंग और जोश के साथ मनाते हैं और राष्ट्र की स्वतंत्रता और सार्वभौमिकता की रक्षा का प्रण लेते हैं।



गोपाल कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

कन्यादान

कितना प्रामाणिक था उसका दुःख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूंजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुःख बांचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की
मां ने कहा पानी में झांककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियां सेकने के लिये है
जलने के लिये नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन है स्त्री जीवन के
मां ने कहा लड़की बेशक होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।



आलोक राय
स.ले.प.अ./कल्याण



मो. शहनवाज अंशारी
लेखापरीक्षक

कविता

जात-जात सड़क पर
पैसा पावा तीन।
दुई तो जइसे पिटे रहेन,
एक चलबै ना कीन्ह।
जौन चलबै न कीन्ह,
ओसे किताब खरीदा तीन।
दुई तो फट-वट गये,
एक पढ़बै न कीन्ह।
जौन पढ़बे न कीन्ह,
वोसे इन्तिहान दिया तीन।
दुई में फेल-वेल होई गये,
एक में नम्बर मिला तीन।
जेमे नम्बर मिला तीन,
वोमें गुरुजी लाफड़ मारेन तीन।
दुई ठो इधर-उधर गवा,
एक लगबै न कीन्ह।
हा--हा--हा--

हमारी हिन्दी

दिल की बातें जुबां, पर लाना आसान हो गया।
राजभाषा हिन्दी से, जीवन आलीशान हो गया।
सपने हमारे महज अब सपने ही बनकर न रहे,
उनको अब हकीकत बनाना आसान हो गया।
देखो क्या सूख जोश भरा हिन्दी ने रगो में हमारी,
जो भी पढ़कर इसे बढ़ा आगे, वो महान हो गया।
संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी परे है इनका ज्ञान
लेकर हिन्दी का ज्ञान लगा अपना जहान हो गया।
न रहा कोई यहाँ हिन्दी के इल्म से अब अंजान,
विलायत में भी, अब तो हिन्दी का बखान हो गया।
फैला है जग में हिन्दी साहित्य का समंदर अपार
तुलसी, मीर, कबीर, संग गालिब का दीवान हो गया।
दौड़ता है इस कदर बनकर लहू रगो में हिन्दी का,
कि बनकर हिन्दी में हमारा देश, हिंदुस्तान हो गया।

मेहनत के फल का महत्व

ईशा कुशवाहा
पुत्री श्री त्रिलोकी नाथ कुशवाहा



एक नगर में प्रतिष्ठित व्यापारी रहते थे, जिन्हें बहुत समय के बाद एक पुत्र की प्राप्ति हुई थी। जिसका नाम चंद्रकांत रखा गया। चंद्रकांत घर में सभी का दुलारा था। अति कठिनाई एवं लंबे समय तक इंतजार के बाद संतान का सुख मिलने पर, घर के प्रत्येक व्यक्ति के मन में व्यापारी के पुत्र चंद्रकांत के प्रति विशेष लाड-प्यार था जिसने चंद्रकांत को बहुत बिगाड़ दिया था। घर में किसी भी बात का अभाव नहीं था। चंद्रकांत की मांग से पहले उसके सभी इच्छा पूरी की जाती थी। शायद इसी कारण चंद्रकांत को न सुनने की आदत नहीं थी और न ही मेहनत के महत्व का आभास था। चंद्रकांत ने जीवन में कभी अभाव नहीं देखा था, इसलिए उसका नजरिया जीवन के प्रति बहुत अलग था इसलिए उसका व्यवहार सही भी नहीं था।

वहीं व्यापारी ने कड़ी मेहनत से अपना व्यापार बनाया था। ढलती उम्र के साथ व्यापारी को चंद्रकांत के व्यवहार के प्रत्यक्ष चिंता होने लगी। चंद्रकांत मेहनत के फल का महत्व नहीं समझता था।

गहन चिंतन के बाद व्यापारी ने यह सोचा कि वह स्वयं अपने पुत्र चंद्रकांत को मेहनत के फल का महत्व सिखायेगा। चाहे इसके लिए उसे कठोर ही क्यों न बनना पड़े।

व्यापारी ने चंद्रकांत को बुलाया और तीखे स्वर में उससे बोला कि तुम्हारा मेरे घर में कोई अस्तित्व नहीं है, तुमने मेरे कारोबार में कोई योगदान नहीं दिया है।

व्यापारी बोला मैं चाहता हूं कि तुम मेहनत करो, धन कमाओ तब ही तुम्हें तुम्हारे धन के मुताबिक दो वक्त का खाना मिलेगा। व्यापारी ने घर में यह बात सभी लोगों से बोल दी थी कि कोई भी व्यक्ति चंद्रकांत की मदद नहीं करेगा। चंद्रकांत से घर के सभी लोग बहुत प्यार करते थे जिसका उसने गलत फायदा उठाया, वह रोज किसी न किसी के पास जाकर धन मांगता और अपने पिता को दे दिया करता था।

एक दिन चंद्रकांत को किसी ने भी कोई धन नहीं दिया और उसे अपनी भूख को शांत करने के लिए गांव में जाकर कार्य करना पड़ा। उस दिन चंद्रकांत बहुत थका हारा व्यापारी के पास घर पहुंचा। उसे देखते ही व्यापारी को समझ में आ गया कि आज चंद्रकांत ने स्वयं पैसे कमाये हैं। व्यापारी ने चंद्रकांत को गले से लगा लिया और अपना कारोबार उसे सौंप दिया।

आज का कूड़ा



अंबरीष श्रीवास्तव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे डर लगता है उसकी अच्छाई से, इतना अच्छा क्यों है वो ? उसकी आवाज में इस कदर तिकताएँ नफरत और बेजारी थी कि भीतर तक दहल गया मैं, लीलाधर जगूड़ी की कविता 'भय भी शक्ति देता है?' अनायास ही याद आ गयी।

तो क्या हुआ? अच्छा ही तो है वो मैंने शायद सिद्धांततः या ये कुछ और उगल दे, सोचकर रस्मी सा प्रतिकार किया।

“तुम नहीं समझोगे, तुम तो हो बौड़म।” कोई अच्छा क्यों होता है, पता है? ये डिप्लोमेसी है, निवेश है, एक प्रतिक्रियावादी मानसिकता है और इसके दीर्घकालिक निहितार्थ भी हैं। इसे एक ट्रैप भी कह लो।

ऐसा कैसे? अब उसकी बातें दिलचस्प लगने लगी थीं मुझे।

“देखो, एक इंसान में कई आयाम होते हैं और उनमें से दो आयाम सबसे प्रभावी निर्णायक और परस्पर विरोधी होते हैं। अब कोई स्पष्टतः और सामाजिक रूप से बहुत अच्छा है तो कहीं न कहीं इसके ठीक उलट उसी इंसान के भीतर उतना ही बुरा एक और व्यक्तित्व घर किये हुए है, अब बात ये है कि अच्छा चेहरा सक्रिय है, चेतन है और बुरा चेहरा अभी जड़ है लेकिन इस जड़ रूप के ज्वालामुखी का दावानल इस अच्छे चेहरे और उसके प्रभामंडल के डोमेन को कब निगल ले, कोई नहीं जानता और मैं खुद को इस अनिश्चित जोखिम से दूर ही रखना चाहता हूँ।

लेकिन आप एक आभासी डर को वास्तविकता पर तरजीह देकर उसके साथ अन्याय तो नहीं कर रहे हैं?

बिल्कुल, कभी-कभी मुझे भी ऐसा ही लगता है लेकिन मेरे अन्दर भी तो दो इंसान बैठे हैं।

और तभी मुझे मेरे भीतर भी मुझे कोई और अस्तित्व में आता महसूस होने लगा।

सुनो

मरना इतना मुश्किल भी नहीं है

जितना

तुम पर मरना

क्योंकि

तुम पर मरने के बाद

जीना पड़ता है

और

जीने की यंत्रणा का परिमाण

बहुत ज्यादा है

मर पाने की आसानी की बनिस्बत।

सड़क निर्माण में कारगर प्लास्टिक अपशिष्ट

हेमंत शर्मा
लेखा परीक्षक



समुद्र और अन्य जगहों पर अपशिष्ट का बोझ कम करने के लिए प्लास्टिक अपशिष्ट से नई चीजें भी तैयार की जा रही हैं इसका इस्तेमाल सड़कों के निर्माण में भी किया जा रहा है।

भारत सरकार, राजमार्गों समेत तभी तरह की सड़कों के निर्माण में प्लास्टिक अपशिष्ट के इस्तेमाल को बढ़ावा दे रही है। खास तौर पर 5 लाख या इससे ज्यादा की आबादी वाले शहरी इलाकों के 50 किमी. के दायरे में होने वाले निर्माण में इस तरह के अपशिष्ट के इस्तेमाल पर जोर दिया जा रहा है। प्लास्टिक अपशिष्ट को इकट्ठा करने के लिए कुल 61,000 से भी ज्यादा घंटों में श्रमदान की पहल की गई है। इन प्रयासों से देशभर में तकरीबन 18,000 किलो प्लास्टिक अपशिष्ट इकट्ठा किया जा सका है। डामर का इस्तेमाल सड़कों के निर्माण में किया जाता है। प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन नहीं किए जाने पर इससे पर्यावरण पर बुरा असर पड़ता है। प्लास्टिक स्वाभाविक रूप से नष्ट भी नहीं होता इसे नष्ट होने में सैकड़ों या हजारों वर्ष लगते हैं। प्लास्टिक इकट्ठा होने से न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुंचता है, बल्कि इसके जहरीले असर के कारण हमारी मिट्टी और पानी भी प्रदूषित होते हैं।

दुनियाँ की आबादी में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है और इसी अनुपात में कचरे का उत्पादन भी बढ़ रहा है। सामान्य सड़कों के मुकाबले प्लास्टिक से बनी सड़कों की अवधि तीन गुना ज्यादा होती है और भयंकर सर्दियों या काफी गर्मियों की स्थिति में भी ऐसी सड़कों को नुकसान नहीं होगा। ब्रिटेन में प्लास्टिक अपशिष्ट से डामर तैयार करने के लिए खास तौर पर एक फैक्ट्री स्थापित की गई है, ताकि इस प्लास्टिक का इस्तेमाल सड़क निर्माण में किया जा सके।

केंद्र सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय से जुड़ी राष्ट्रीय ग्रामीण सड़कों के निर्माण में प्लास्टिक अपशिष्ट के इस्तेमाल के लिए दिशा-निर्देश जारी किए गये हैं।

ग्रामीण इलाके की सड़कों के निर्माण में इन प्लास्टिक अपशिष्टों का इस्तेमाल किया जा सकता है :

- 60 माइक्रोन तक की मोटाई वाले (पीई, पीपी और पीएस) फिल्म (कैरी बैग, कप)
- किसी भी मोटाई वाला हार्ड फोम
- किसी भी मोटाई वाला सॉफ्टफोम
- 60 माइक्रोन वाले लैमिनेशन युक्त प्लास्टिक पैकिंग मैटेरियल जिसका इस्तेमाल बिस्कुट, चॉकलेट आदि की पैकिंग में किया जाता है।

पॉलीविनाइल क्लोराइड (पीवीसी) शीट या फ्लैक्स शीट का इस्तेमाल किसी भी स्थिति में नहीं किया जाना चाहिए। इसके अलावा, अपशिष्ट प्लास्टिक मॉडिफाइर को धूल से मुक्त होना चाहिए और टुकड़ों में (2-3 मिमी.) में होना चाहिए। छिटपुट कार्यों के लिए सूखे डामर का प्रयोग करने का सुझाव दिया जाता है। सीआरआरआई के मुताबिक, संबंधित सामग्री में अलकतरा के अलावा प्लास्टिक अवशेष के टुकड़े 8 प्रतिशत होंगे। स्टोन (एग्रीमेंट) मिक्स को मिक्स सिलेंडर पर स्थानांतरित किया जाता है जहां इसे 165°C पर गर्म किया जाता है और इसके बाद मिक्सिंग पडलर में ले जाने की प्रक्रिया होती है। इसके बाद कई और प्रक्रियाओं को अंजाम दिया जाता है और प्लास्टिक फिल्मों को पिघलाकर जरूरी सामग्री तैयार की जाती है। इसी तरह, अलकतरा को अलग चैंबर में 160°C पर गर्म कर तैयार रखा जाता है। मिक्सिंग पडलर पर गर्म अलकतरे और प्लास्टिक कोट वाली सामग्री को मिलाया जाता है और मिश्रित सामग्री का इस्तेमाल सड़क निर्माण में किया जाता है।

सड़कों के निर्माण में अलकतरे के साथ प्लास्टिक का इस्तेमाल होने पर न सिर्फ सड़कें ज्यादा टिकाऊ और चिकनी बनती हैं बल्कि ये किफायती और पर्यावरण के अनुकूल भी होती हैं। प्लास्टिक अपशिष्ट का इस्तेमाल अलकतरा के मॉडिफाइर के तौर पर किए जाने से अलकतरे की गुणवत्ता भी बेहतर हो जाती है। साथ ही, ऐसी सड़कों को पानी से भी नुकसान नहीं पहुंचता है।

आने वाले वक्त में प्लास्टिक का इस्तेमाल पूरी तरह से बंद होने के आसार भी नहीं दिख रहे हैं, लिहाजा प्लास्टिक अपशिष्ट के उचित प्रबंधन की आवश्यकता है। साथ ही, प्लास्टिक सामग्रियों में वैज्ञानिक और चिकित्सा संबंध तकनीक को भी बेहतर बनाने की संभावना है। सरकार पानी के लिए प्लास्टिक बोतलों को कम से कम इस्तेमाल करने की अपील भी कर रही है। मानव स्वास्थ्य पर प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में भी काफी चीजें सामने आ रही हैं। ऐसे माहौल में आम आदमी भी प्लास्टिक के उचित इस्तेमाल और निपटान में अपनी भूमिका निभा सकता है ताकि यह सामग्री रिसाइकल की प्रक्रिया में शामिल हो जाए। सरकार और नीति निर्माताओं को इस दिशा में मानव और लक्ष्य तय करना चाहिए। देश की जनता को इसमें सहयोग कर प्लास्टिक से मुक्त कराने में आगे आना चाहिए।

दोहे

पाँच तत्व से बना शरीर,
करो वही जो कहै जमीर।
इससे बड़ा न कोई प्लाट,
कोयला, लकड़ी, रसरी, खाट।
यदि हो विधिवत स्वस्थ बुलंद,
तब समझो जीवन मकरन्द।
आए अगर पराए काम,
जीवन का यह बेहतर दाम।

दृमाकांत शर्मा
सेवानिवृत्त पर्यवेक्षक

तंजावुर का 'बृहदेश्वर मंदिर' - एक अद्भुत कलाकृति



प्रिया सिंह तोमर

तंजावुर (तंजौर) का बड़ा मंदिर चोल युग की स्थापत्य कला की भव्यता के बारे में बहुत कुछ बयां करता है। भगवान शिव जी के इस मंदिर में विशाल शिव लिंग है। राजसी नंदी (बैल), इस मंदिर पर पहरा दे रहे हैं। एक ही पत्थर से तराशा गया यह भारत में दूसरा सबसे बड़ा नंदी है। यह मंदिर यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल है। अपनी भव्यता और विशालता के कारण ही इसे बृहदेश्वर या बड़ा मंदिर कहा जाता है।

तंजावुर (तंजौर) का प्राचीन नाम कावेरी डेल्टा (नदीमुख भूमि) की सांस्कृतिक राजधानी है। यह नगर और इसकी सांस्कृतिक विरासत 3 सशक्त साम्राज्यों-चोल, विजयनगर और मराठा राजाओं की देन है जिन्होंने तमिलनाडु के इस भाग पर एक सहस्राब्दी से अधिक समय तक शासन किया। इन तीनों में से चोलों को इसे संभावित राजनीतिक राजधानी के रूप में ढालने का श्रेय जाता है। जब 9वीं शताब्दी के आरंभ में विजयला चोलों ने इसे अपने आधीन कर लिया था तब से उनके उत्तराधिकारी हर संभव दिशा में सम्राट की सीमा का विस्तार करने में जुटे रहे। राजराजा-प्रथम अपने अनेक सैनिक अभियानों के दौरान पल्लवों और अन्य पूर्ववर्तियों के संरक्षण में पनपने वाली उत्कृष्ट मंदिर वास्तुकला से प्रेरित हुए होंगे। शैव संप्रदाय के अनुयायी उनके पूर्वजों ने भी, जिन्होंने शिव के कई लोकप्रिय मंदिरों के विकास में योगदान दिया, उन्हें प्रेरित किया गया होगा। राजराजा-प्रथम के लिये यह स्वाभाविक ही है कि उन्होंने शिव के प्रति अपनी सबसे विराट भेंट के रूप में इस विशाल निर्माण को अपने हाथ में लिया।

मंदिर अभिन्यास और योजना

मंदिर परिसर पूर्व पश्चिम में लगभग 244 मीटर और उत्तर-दक्षिण में 122 मीटर तक फैला है और शिवगंगई छोटे किले के भीतर स्थित है। यह अतिरिक्त किलाबंदी कार्य 17वीं शताब्दी के आस-पास सेवानायक द्वारा नवीनीकरण के दौरान किया गया था। इस किले के चारों ओर एक खाई भी है। मराठा काल के दौरान निर्मित एक अति अलंकृत मेहराबदार प्रवेश द्वार, जिस पर विभिन्न देवी-देवताओं की छवियाँ उत्कीर्ण हैं, आपका स्वागत करता है।

जैसे ही आप इस प्रवेश द्वार से भीतर प्रवेश करते हैं। आपका स्वागत एक पारंपरिक राजराजा काल गोपुरम करता है जिसका नाम केरललंकन तिरुवासल है, जो 29.25 मीटर लंबा और 17.4 मीटर चौड़ा है। इस पाँच मंजिले गोपुरम के दोनों ओर एक कोष्ठकीय गलियारा है। यहाँ से 60 मीटर की दूरी पर दूसरा गोपुरम है। जिसे राजराजन तिरुवासल कहा जाता है। इस गोपुरम के पूर्वी भाग में विशाल एकात्मक द्वारपालक या द्वार संरक्षक है। इसके अलावा इस गोपुरम के शिला आधार पर नक्काशे हुए पैनल हैं जिन पर पुराणों के प्रसंगों को दर्शाया गया है। इस गोपुरम में प्रवेश करने पर आगंतुक को श्री विमानम और देवालयों के मनभावन सौंदर्य से परिपूर्ण भव्य चित्रावली दृष्टिगोचर होती है। परिसर की दीवार की परिधि के चारों ओर बहुउद्देशीय स्थान के रूप में उपयोग करने के लिये दुमंजिले पृथक कक्षों का निर्माण किया गया है।

दक्षिण-पश्चिम छोर पर गणेश का मंदिर है, जिसे सारमोजी-द्वितीय के समय में निर्मित किया गया था। राजराजा के शासनकाल में निर्मित मंदिर को जिसका परिवारा अलयट्टू पिलैयार के नाम से उल्लेख शिलालेख में किया गया है तहसनहस कर दिया गया था, इसलिये मराठा राजा ने एक नई संरचना का निर्माण किया। इस मंदिर का दृष्टिगत रूप से संतुलन 17वीं शताब्दी के दौरान उत्तर-पश्चिम छोर पर निर्मित सुब्रम्हाव्य के मंदिर से होता है। यह एक अत्यंत अलंकृत मूर्तिकला दीर्घा है जिसमें मुरुगन या सुब्रह्मण्य को उनकी पत्नियों वल्ली और देवसेना के साथ उत्कीर्ण किया गया है। चौखट के चारों ओर बने स्तंभ, भित्ति स्तंभ और कुडु नायककालीन कारीगर के बेहतरीन शिल्प कौशल की मिसाल हैं। इस मंदिर के द्वारपाल बहुत ही चमकदार ग्रेनाइट पत्थर से तराशे गये हैं और प्रक्षालन जल को इकट्ठा करने के लिये स्थापित पत्थर अपनी कारीगरी के लिये उल्लेखनीय हैं। इस मंदिर के सामने बने खम्भोर कक्ष में मराठा राजशाही के सदस्यों के चित्र हैं।

गर्भगृह के उत्तर में चंडीकेश्वर को समर्पित चोल काल का एक परिष्कृत मंदिर है। अग्रभाग में बने एक कक्ष एक अर्धमंडप और एक विस्तृत विमान के साथ यह चंडीकेश्वर का बेहतरीन ढंग से परिकल्पित मंदिर है, जो आधिकारिक रूप से शिव मंदिर का मुख्य लेखाकार है। दिलचस्प बात यह है कि मंदिर को दिये गये दान और मंदिर में विभिन्न गतिविधियों के लिये बनायी गयी अक्षयनिधि को स्वयं राजा द्वारा विस्तृत रूप से अनेक शिलालेखों की श्रृंखला के रूप में प्रलेखित किया गया है। इस मंदिर के सामने की दीवार पर पहला शिलालेख शुरू होता है।

देवी पार्वती का मंदिर मुख्य परिसर के उत्तर की ओर स्थित है। श्रद्धालुओं द्वारा वृहन्नायकी, पेरियानायकियोर उलागममुजुधुदैयाल के रूप में पूजनीय बृहदेश्वर की पत्नी के रूप में देवी का मंदिर पांड्या राजाओं द्वारा 13वीं शताब्दी में बनाया गया था। कम उठे हुये चबूतरे और दहलीज पर एक मंजिला विमान के अग्र भाग में बने मंडप के साथ बाद में भी बढ़ा दिया गया था। इस मंदिर की छत और दीवारों पर मराठा कला के दौरान की गयी चित्रकारी अंकित है।

श्री विमानमः

श्री के.ए. नीलकांत शास्त्री कहते हैं, “यह मंदिर जो दक्षिण भारतीय इतिहास के एक उत्कृष्ट काल का बेहतरीन स्मारक है और तमिल वास्तुकला की सबसे मनोहर बानगी है अपने विलक्षण अनुपात और विन्यास की सादगी के लिये उल्लेखनीय है।” यह तब समझ आता है जब आगंतुक श्री विमान के सामने विनयपूर्वक खड़ा होता है और एक क्षण के लिये भक्ति की शक्ति के बारे में सोचता है। इस महान उपलब्धि को प्राप्त करने के लिये राजराजा ने कितने पर्वतों का उपयोग किया होगा यहां हमें एक भावनात्मक ज्वार से ओत-प्रोत कर देता है।

पुरालेख के साक्ष्यों के अनुसार राजराजा प्रथम ने अपने पच्चीसवें शासकीय वर्ष के दो सौ पचहत्तरवें दिन अर्थात् 1009-10 ईसवी में विमान में जड़ने के लिये सोनाजटित कलश प्रदान किया था।

आगमों के अनुसार गर्भगृह के शीर्ष पर स्थित विमानम को सुखमलिंग का प्रतीक माना जाता है। यहां वास्तव में एक धार्मिक प्रतीक है जिसे स्थापना के दौरान आच्छन्नकारी अनुष्ठानों की आवश्यकता होती है। इसे पवित्र पर्वत के रूप में माना जाता है। और इसलिये राजराजा इस विमानम को दक्षिण मेरु के रूप में वर्णित करते हैं। जो दक्षिण का परमपूजनीय मेरु पर्वत है। इसलिये पूर्वी अग्र भाग पर कैलाश स्थलाकृति को एक पत्थर पर उत्कीर्ण किया गया है जिसे कैलाश के दैनिक दृश्य से अलंकृत किया गया है। जिसमें देवी, गणेश, मुरुगन, बंदी, ऋषियों और अन्य दिव्यजन दर्शाये गये हैं। जो शिव के अलौकिक परिवार के सदस्य हैं।

इंजीनियरिंग की अद्भुत मिसाल

दुमंजिला गर्भगृह अपने शीर्ष पर विमान के साथ वास्तव में एक अद्भुत निर्माण रचना है। निर्माण सामग्री का स्रोत, उन्हें किसके द्वारा लाया गया, नींव का प्रकार और जोड़ने वाली सामग्री की उत्कृष्टता जैसे बुनियादी सवालों के अलावा इस डील-डौल के भवन के निर्माण के लिये प्रेरणा का स्रोत अभी भी एक अनसुलझा रहस्य है। संरचनात्मक भार सहयोजन (स्ट्रक्चरल लोड शेयरिंग) की बहुत ही शानदान ढंग से योजना तैयार की गई है। पिरामिड में ढलान लाने के लिये सिलियेवार परतों को कुछ इंच अंदर धकेला गया और इस प्रक्रिया से एक सौम्य ढलान तैयार हुयी। इस पिरामिड के ऊपर देखते हैं तो खोखला विमानन दंतुरित (इंडेंटेड) ढलान की सुरम्यता के साथ मनोहारी रूप से ऊपर की ओर बढ़ता दिखायी देता है।

गर्भगृह

बृहदेश्वर मंदिर का गर्भगृह एक विशाल चौकोर कक्ष है, जिसकी भुजाएं 790 मीटर की है। पूर्वी एवं पश्चिमी दीवारों पर 2 शहतीर (बीम) लगाये गये हैं। और कोनों में चार विकर्ण बीम (शहतीर) लगाये हैं। यह स्पष्ट है कि गर्भगृह के निर्माण से पहले विशाल शिवलिंग स्थापित किया गया होगा। गर्भगृह एक दोहरी दीवार वाली संरचना है जिसमें कक्ष के चारों ओर लगभग 2 मीटर चौड़ा स्थान है। पूर्वी भाग में मुख्य मंदिर का भव्य प्रवेश द्वार है। राजराजा के समय में बनाये गये अमूल्य विदितचित्रों की खोज 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुयी। ऐसा ही स्थान विमानन की पहली मंजिल में भी है। वहाँ परिधि के चारों ओर भरतनाट्यकरणों यानी शिव की नृत्य मुद्राओं को दर्शाने वाले नक्काशे शिलाचट्ट स्थापित किये गये हैं। यह श्रृंखला अधूरी है क्योंकि यहाँ पारंपरिक नृत्य नियमावली में वर्णित 108 मुद्राओं में से केवल 81 दर्शायी गयी हैं।

लगभग 1.6 मीटर व्यास का लिंगावनम 5.25 मीटर व्यास के वृत्ताकार पीठिका में स्थित है। लिंगम के ऊपर की दूसरी मंजिल खाली है और विमानन की पूरी ऊंचाई तक केवल खोखला स्थान है। इस कोष्ठ को जानबूझकर शिव के अरूप या निराकार रूप को दर्शाने के लिये बनाया गया है। इसे पराकाशा का व्योम स्थान के रूप में भी देखा जाता है जहाँ शिव अपना आनंदतांडव करते हैं।

भव्य स्थापत्य

पूर्व की ओर में मंडपमों की एक श्रृंखला गर्भगृह की ओर बढ़ती है। मुख मंडपम बाद में जोड़ा गया है और अब यह आगंतुकों के लिये पोर्टिको का काम करता है। इसके बाद एक भव्य महा मंडपम है, जो लम्बे स्तम्भों की पंक्तियों के साथ अति सुंदर ढंग से निर्मित विविक्त कक्ष है। इस कक्ष से गुजरना अपने आप में सुखद अनुभव है। इसके बाद हम अर्ध मंडप में प्रवेश करते हैं। एक अपेक्षाकृत छोटा कक्ष है जिसमें फिर से ऊँचे स्तम्भ हैं। इस मंडपम से पहली मंजिल तक पहुँचा जाता है। अंतराला तक उत्तर और दक्षिण की ओर बनी सीढ़ियों में पहुँचा जा सकता है। यह वह जगह है जहाँ श्रद्धालुश्री राजराजेश्वरम उदैयापरमास्वामी की आराधना के लिये खड़े होते हैं जिन्हें स्वयं राजराजा इस नाम से संबोधित करते थे।

कला और सौंदर्य शास्त्र

मंदिर अपार भव्यता से परिपूर्ण है जो सौंदर्यशास्त्र और निर्माण योजना के परिपक्व भाव को दर्शाती है और जिसे इस भूमि और उसके वासियों ने एक सहस्राब्दी पूर्व आत्मसात् किया था। गर्भगृह की बाहरी दीवार में विभिन्न देवी-देवता स्थापित हैं जैसा आगमों में निर्दिष्ट है। दीवार पर बने आले एक आवृत्ति में हैं और मकरतोरण से अलंकृत हैं। गणेश, ब्रम्हा, विष्णु, लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा जैसे कुछ देवी-देवता हैं जो अपनी-अपनी दिशाओं में विराजमान हैं। शिव के विभिन्न, रूपों की एक श्रृंखला आलों में स्थापित की गयी है और ये रूप वे हैं जिनका उल्लेख आगमों में किया गया है और पवित्र धेवरम ग्रंथों में गाया गया है। शिव के विभिन्न रूपों में नटराज, लिंगोदकाव, गंगाधर, अर्धनारीश्वर, कला साम्हरा, हरिहर और अन्य शामिल हैं। यह व्यवस्था पहली मंजिल तक भी जारी है और वहाँ के आलों में शिव त्रिपुरांतक और विंध्येश्वर के रूप में हैं। आलों में विराजमान प्रत्येक देवता के अपने परिचारक और श्रद्धालु भी हैं जिन्हें आलों के दोनों ओर दर्शाया गया है।

गर्व का प्रतीक

राजराजेश्वरम् जैसा कि मंदिर को राजराजा ने नाम दिया था एक व्यक्ति के जीवनकाल के ध्येय के रूप में जाना जा सकता है और जिसे लाखों व्यक्तियों के संयुक्त प्रयास ने साकार रूप दिया। परंपराओं का पालन करते हुये सर्वशक्तिमान को एक विशाल भेंट अर्पित करने का स्वप्न एक सहस्राब्दी पूर्व हासिल किया गया और मंदिरों के समाज की प्रमुख धुरी के रूप में सेवा करने की अवधारणा की परख और स्थापना की गयी। इस मंदिर के निर्माण में राजराजा ने जिन विभिन्न इंजीनियरिंग चुनौतियों का सामना किया वह सोचा-समझा प्रतीत होता है मानो वह कुछ सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे। उथली खाई की नींव रखना और उस आकार-प्रकार का लक्ष्य साधना जिसे पहले कभी नहीं आजमाया गया था, यह दर्शाता है कि संरचना संबंधी विशेषज्ञों ने कितनी गहराई से इसका अध्ययन किया होगा।

संरचना को जिस रूप में बनाया जा रहा था उसके अनुरूप, उसे मिट्टी से भरना और ढकना इस पैमाने और आकार के लिये विश्वसनीय सिद्धांत प्रतीत होता है। अन्यथा शीर्ष भागों में मचान की सहायता से पहुँचना व्यवहारिक रूप से असंभव होता है। इसलिये जैसे-जैसे परतें बनाई गयीं उन्हें साथ-साथ भर दिया गया और मिट्टी से ढक दिया गया जिससे एक रैंप का निर्माण हुआ जो सामग्री को अगले स्तरों तक पहुँचाने में सहायक हुआ। निर्माण कार्य के सम्पूर्ण होने पर भव्य संरचना को उसकी पूर्ण महिमा में प्रकट करने के लिए मिट्टी को खोदकर निकाला गया। यह निश्चित रूप में हमारे लिए गर्व का प्रतीक है और इस विस्मयकारी संरचना का संरक्षण करना हमारा परम कर्तव्य है।

खेल का महत्व

अमर काला
लेखापरीक्षक



टेस्ट क्रिकेट की शुरुआत आधिकारिक तौर पर 15 मार्च 1877 को हुई थी। यह मैच ऑस्ट्रेलिया के विश्व प्रसिद्ध मैदान मेलबर्न में हुआ था जिसमें ऑस्ट्रेलिया की टीम इंग्लैंड के खिलाफ मैदान में उतरी थी। इसमें रोमांच की बात यह है कि दोनों टीमों के शानदार खेल के बाद ऑस्ट्रेलिया की टीम ने क्रिकेट के जन्मदाता इंग्लैंड को 45 रनों से पराजित कर एक बड़ी जीत दर्ज की थी। इसके बाद यह खेल और भी लोकप्रिय होने लगा और फिर इसके नियमों में निरंतर संशोधन होने लगे तथा खेल को और रोचक बनाने के लिए वर्ष 1975 में टेस्ट क्रिकेट के साथ-साथ एक दिवसीय क्रिकेट भी प्रचलन में आया जिसने क्रिकेट के रोमांच को अलग स्तर पर पहुँचा दिया। वर्ष 1983 तक एक दिवसीय क्रिकेट 60 ओवर प्रतिपारी खेला जाता था जिसे वर्ष 1987 में घटाकर 50 ओवर प्रतिपारी कर दिया गया। धीरे धीरे 50 ओवर प्रतिपारी दर्शकों को उबाऊ लगने लगा जिस वजह से क्रिकेट के एक नये प्रारूप टी20 के रूप में दर्शकों के सामने आया। इसकी वजह से दुनियाभर में ढेर सारे टी20 प्रतियोगिताओं का आयोजन होने लगा जिससे इस खेल का व्यवसायीकरण हो गया। आज के दौर में क्रिकेट के खेल के साथ साथ क्रिकेट के अन्य फील्ड में भी आप शानदार कैरियर बना सकते हैं।

क्रिकेट या अन्य कोई भी खेल सिर्फ एक खेल नहीं और इसका मैदान सिर्फ एक खेल का मैदान नहीं है, यह जीवन है और इससे अनुशासन, संकल्प, निश्चय, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य से लक्ष्य हासिल करना, शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुस्त दुरुस्त रहना, अपने आलोचकों को अपने निरंतर प्रयास, प्रगति और अच्छे प्रदर्शन से जवाब देना और सबसे महत्वपूर्ण एक जुटता, समाज में भाईचारा, सबको समान दृष्टिकोण से देखना और एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा यह सब हमें सीखने को मिलती है। मनुष्य जीवन भी क्रिकेट की भाँति अनिश्चिताओं से भरा हुआ है, इसमें आप कितने भी बड़े खिलाड़ी क्यों ना हों आप कभी भी शून्य पर आउट हो सकते हैं और अगले ही मैच में शतक भी जड़ सकते हैं तथा वास्तविक जीवन में भी आप परिश्रम और बुद्धिकौशल से असफलताओं को अपने दृढ़निश्चय से सफलताओं में परिवर्तित कर सकते हैं।

आज भारत देश में क्रिकेट सबसे लोकप्रिय खेल बन चुका है और विश्व स्तर पर इसने हमारे देश को गौरवान्वित किया है और आगे भी करता रहेगा।

एक छोटा सा निवेदन है कि आज के मोबाइल/टेक्नोलॉजी के दौर में पढ़ाई के साथ-साथ अपने बच्चों/प्रियजनों को किसी भी आउटडोर खेल में आधा से एक घंटा के लिए प्रोत्साहित करें जिससे बच्चों का सामाजिक, शारीरिक एवं बौद्धिक विकास और बेहतर तरीके से हो सके।

धन्यवाद!

मेरी मैराथन दौड़

मनीष मिश्रा
सहायक पर्यवेक्षक



मैराथन शब्द एक ग्रीक किंवदंती से आया है, जो फीडिपिड्स (Pheidippis) की कहानी बताता है, जो 490 ईसा पूर्व में मैराथन के मैदानों से एथेंस तक दौड़कर फारसी सेना पर यूनानियों की जीत की खबर पहुँचाने के लिये दौड़ा था। इसी कहानी पर आधारित यह दौड़ पहली बार वर्ष 1896 में ओलंपिक खेलों में पेश की गई थी। इसी कहानी पर आधारित यह दौड़ पहली बार वर्ष 1896 में ओलंपिक खेलों में पेश की गई थी। यह एक ऐसी दौड़ है जिसमें लोग 42 किलोमीटर या लगभग 26 मील की दूरी तक सड़कों पर दौड़ते हैं।

यह एक ऐसी गतिविधि है जिसे पूरा होने में लंबा समय लगता है और इसके लिये बहुत अधिक ऊर्जा एवं दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है।

मैंने अभी तक 10 मैराथन दौड़ दौड़ी जिसमें नैनीताल की पहाड़ियों में 50 किमी की दौड़ शामिल है। मैराथन दौड़ने के लिए कठिन प्रशिक्षण की ज़रूरत होती है, कहा जाता है कि पूरे विश्व की आबादी में सिर्फ 0.17 प्रतिशत यानी 1 प्रतिशत से भी कम लोग मैराथन दूरी दौड़ कर पूरी कर पाते हैं। इसके प्रशिक्षण के लिए मैं प्रति माह 300 से 350 किमी दौड़ता था जिसमें तेज दौड़ना, धीरे दौड़ना (एरोबिक और एनारोबिक) साथ ही स्ट्रेंथ के लिये कई अलग अलग एक्सरसाइज़ भी करता था। उमस भरी गर्मी हो या ठिठुरती ठंड या बारिश हर परिस्थितियों में दौड़ना होता था जिससे मानसिक और शारीरिक तौर पे दर्द को सहन करने की शक्ति पैदा हो। मैराथन दौड़ के दौरान दिमाग और शरीर के बीच एक द्वन्द चलता रहता है जिसमें शरीर पर मानसिक नियंत्रण करना बहुत कठिन होता है खास तौर पर 30किमी की दूरी के बाद जिसे अंग्रेज़ी में (रनर्स वॉल) कहाँ जाता है। पूरी दौड़ के दौरान शरीर में पानी और इलेक्ट्रोलाइट लेते रहना होता है क्योंकि पानी और नमक की कमी से थकान और मांसपेशियों में खिंचाव का खतरा बना रहता है। फिनिश लाइन को पार करने के बाद जो आत्म संतुष्टि मिलती है उसे शब्दों में पिरोना बड़ा मुश्किल है, शरीर और दिमाग मिलकर गहन ध्यान में चले जाते हैं।

दौड़ना आदि काल से ही मनुष्य का सबसे बड़ा हथियार था जिससे वो शिकार भी करता था और शिकार होने से बचता भी था। आजकल की मानसिक भागा दौड़ी में हम शारीरिक दौड़ को भूल गये हैं। अब हम मेंटल स्ट्रेस ज्यादा लेते हैं और बायोलॉजिकल स्ट्रेस (यानी शरीर को तड़पाना) बिल्कुल नहीं लेते जिसके कारण शरीर में मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ पैदा होती हैं। दौड़ने से शरीर में एंडोर्फिन हार्मोन का उत्सर्जन होता है जिसे हम रनर्स हाई बोलते हैं जो हमको खुशी की अनुभूति देता है जिससे दिन भर शरीर और दिमाग तरो ताज़ा रहता है।

कई लोगों की ये भ्रांतियाँ हैं कि दौड़ने से घुटने खराब होते हैं, सड़क पर नहीं दौड़ना चाहिए और 40 या 50 की उम्र में नहीं दौड़ना चाहिए पर ऐसा नहीं है, दौड़ने से घुटने खराब नहीं बल्कि मज़बूत होते हैं और शरीर को स्केलेटल स्ट्रेंथ मिलता है जिससे गठिया और तमाम तरह की बीमारियाँ नहीं होती हैं जबकि घुटना नहीं दौड़ने से कमज़ोर होता है, मैराथन दौड़ हमेशा सड़कों पर आयोजित होती है और कनाडा के रहने वाले फ़ौजा सिंह दुनिया के सबसे बुजुर्ग धावक थे जिन्होंने 100 साल की उम्र में मैराथन दौड़ कर विश्व रिकॉर्ड बनाया था। आज कल जिसे देखो वो मॉर्निंग वॉक पर जा रहा है पर उनका कहना होता है कि वज़न और पेट कम नहीं हो रहा है ऐसा इसलिए है कि वॉक करने से कैलोरी कम खर्च होती है और दौड़ने से ज्यादा खर्च होती है। दौड़ने की शुरुआत पहले कम दूरी से करनी चाहिए फिर उसे धीरे धीरे बढ़ाना चाहिए।

हम सभी को शारीरिक दौड़ अपनी दिनचर्या में सम्मिलित करनी चाहिए जो हम आजकल के मानसिक दौड़ में भूल चुके हैं।



प्रवीण कुमार कक्कर
सहायक पर्यवेक्षक

कविता

मत करो परिणाम की यारों प्रतीक्षा तुम कभी
वो तो मिलना है जरूरी, कार्य हो जाने के बाद।
उसकी आँखों के समंदर में बहा मदहोश सा यूँ
देर तक खामोश था मैं, होश आ जाने के बाद।
देर तक सोचा था, उसके सामने मुझे क्या है कहना
कह न पाया कुछ भी लेकिन, उसके आ जाने के बाद।
मैं तो काफी दूर तक देता ही रहता साथ उनका
वे ही बिछड़े राह में, कुछ दूर ही जाने के बाद।
था तबाही और बरबादी का आलम हर तरफ ये
दृश्य देखा सबों ने, तूफान थम जाने के बाद।
साथ में लाये थे क्या और साथ ले जाओगे क्या तुम
फिर ये आपा-धापी अब क्यों, इतना पा जाने के बाद।
बात मेरी तो अभी नश्वर सी बन चुभती ही होंगी
होंगी कल इतिहास ये, मेरे चले जाने के बाद।



‘असुरक्षित नारी’

राजीव श्रीवास्तव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चीरहरण की घटना में भीड़ तो बहुत थी,
पर ‘हमदर्द’ कोई नहीं था.
तमाशबीन तो बहुत थे,
पर ‘मर्द’ कोई नहीं था।
‘बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ’
की बातें बहुत थीं.
पर नारी को निर्वस्त्र घुमाने वाले,
कायरों में हमदर्द नहीं था।
अबला दिख रही नारी,
सबलों की खामोशी है जारी।
निर्भय घूम रहे अत्याचारी,
सर्वत्र है लाचारी।
मौन हो रही कोयल,
मेंढक हैं टर्न रहे।
कौवे की कांव पर,
गीदड़ हैं मुस्कुरा रहे।
हंस हार मान बैठा,
गधे खूब चिल्ला रहे।
हाहाकारी माहौल है.
वैमनस्यता की आग में,
खून रहा खौल है।

कमजोर पड़ गई जुबान की तौल है।
बोल रहा हर कोई यहाँ उत्पाती बोल है।
शांत चित्त वालों का धैर्य रहा डोल है,
जिन्दगी का नहीं यहाँ कोई मोल है।
जिसे बोलना है वो खामोश है,
समीप उसके डर का आगोश है।
लोकतंत्र में लोक हित लापता है,
गलती बताना बहुत बड़ी खता है।
हर कोई अपने में व्यस्त है,
भागमभाग जबरदस्त है,
नियम-कानून ध्वस्त है,
प्रशासन पस्त है,
नेता मस्त है,
जनता त्रस्त है,
न्याय का सूरज अस्त है।
सुनो हे गिरधारी,
अर्जी है हमारी,
द्रौपदी है दुखियारी,
भीष्म और धृतराष्ट्र में भीषण है लाचारी।
सुदर्शन चक्र चलाओ हे लीला धारी,
दुर्योधन-दुःशासन से बचाओ हे त्रिपुरारी,
दिखावा बहुत है लेकिन असुरक्षित है नारी!

योग से बनें निरोग

विजय कुमार शुक्ला

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक



योग, व्यायाम तथा प्राणायाम का हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें जीवन की बहुत बड़ी समस्याओं का समाधान है। आज-कल की जीवनशैली हमारे शरीर को कमजोर एवं बीमार बना रही है, किंतु लोगों की मनोस्थिति ये हो चुकी है कि यदि शरीर में कोई कमी या बीमारी होती है तो सब उसे दवाओं के माध्यम से ही ठीक करने में लग जाते हैं और योग या व्यायाम के महत्व को अनदेखा कर देते हैं। ये विचार आपको किसी एक ही उपचार पर निर्भर बना देता है और आप इसकी पकड़ से कभी मुक्त नहीं हो पाते हैं। हम योग या व्यायाम से न केवल अपने शरीर बल्कि अपने मन को भी एकाग्र एवं संतुलित बना सकते हैं लेकिन ये सब आपकी प्रबल इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है।

योग आपके शरीर को संतुलित करने एवं बीमारियों से लड़ने में अधिक सक्षम बनाने का एक बहुत ही कारगर माध्यम है। आज विश्व के प्रत्येक देश योग से जुड़ कर इसके महत्व को समझ चुके हैं और इसके उपयोग को अपने दिनचर्या में भी बहुत महत्व देते हैं। रोज सुबह योगासन, व्यायाम तथा प्रणायाम करने से पूरे दिन एक स्फूर्ति का अहसास होता है। पिछले कुछ वर्षों से योग को जनमानस के जीवन का एक हिस्सा बनाने एवं इसे पूर्ण रूप से अपनाने के लिए सरकारी स्तर एवं स्थानीय स्तर पर बहुत ज्यादा पहल की गई जिससे लोग इसके महत्व एवं इसको अपनाने के फायदे समझ सकें और अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकें जो स्वस्थ, मनोरंजक, स्फूर्तिदायक एवं ज्ञान-वर्धक भी हो। जीवन केवल जैसे-तैसे जीने का नाम नहीं है बल्कि इसको लम्बे समय तक बीमारी से मुक्त कैसे रखें एवं एक सुख-मय जीवन कैसे जीना है, इसका विचार हर समय हमारे मन में होना चाहिए।

सुबह योग का नियमित अभ्यास हमें बहुत सी शारीरिक एवं मानसिक बीमारियों से बचाने का काम करता है। योग के विभिन्न आसन मानसिक एवं शारीरिक मजबूती के साथ ही अच्छाई की भावना का निर्माण करते हैं। यह मानव मस्तिष्क को तेज एवं बौद्धिक स्तर को सुधारता है तथा मन को स्थिर रखकर एकाग्रता बढ़ाने में सहायता करता है। योग प्रयोग किया गया एक दर्शन है जो नियमित अभ्यास के माध्यम से स्व - अनुशासन एवं आत्म जागरुकता को विकसित करता है। योग का अभ्यास किसी भी आयु, वर्ग या धर्म के लोग कर सकते हैं यह किसी भी बंधन से परे एवं स्वतंत्र है। योग के कई प्रकार हैं जैसे राजयोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग एवं हठयोग। लेकिन जब ज्यादातर लोग भारत या विदेशों में योग के बारे में बात करते हैं, तो उनका आमतौर पर आशय हठ योग से होता है जिसमें ताड़ासन, धनुषासन, भुजंगासन, कपालभाति एवं अनुलोम-विलोम जैसे कुछ व्यायाम शामिल होते हैं। योग पूरक या वैकल्पिक चिकित्सा की एक महत्वपूर्ण प्रणाली है। योग हमारे शरीर में शांति बढ़ाने और सभी प्रकार के तनावों को दूर करने में सहायक है। बिना किसी समस्या के जीवन भर स्वस्थ रहने का सुरक्षित एवं आसान तरीका योग है। जो किसी भी जटिलता से परे है। इसमें प्रारंभ के दिनों में ही कुछ समस्या हो सकती है क्योंकि शुरू में शरीर कुछ सख्त होता है इसमें लचीलापन बहुत कम होता है। इसी सख्त एवं कठोर शरीर को योग लचीला एवं फुर्तीला बना देता है जिससे शरीर की क्षमता एवं कार्यकुशलता में वृद्धि हो जाती है।

महर्षि पतंजली को योग का जनक कहा जाता है तथा भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जो योग के प्रसार-प्रसार में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। पहले भारत में ही योग को महत्व दिया जाता है लेकिन भारत के प्रयासों से ही आज योग पूरे विश्व में अपनी एक पैठ बना चुका है जो करोड़ों लोगों के जीवन को न केवल बदल रहा है बल्कि एक बहुत ही अच्छा रोजगार का माध्यम भी बन चुका है। कोई लोगों को योगासन की शिक्षा दे रहा है तो कोई योग के सिद्धान्त पढ़ा रहा है, यह केवल स्थानीय नहीं रह गया है बल्कि वैश्विक हो चुका है। भारत के प्रयासों से 21 जून को वर्ष 2015 में योग दिवस के रूप में मान्यता प्रदान की गई, जिसके कारण प्रतिवर्ष 21 जून को योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज-कल इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से भी योग की शिक्षा एवं योगसनों का अभ्यास कराया जाता है जिसमें योग गुरु जैसे तिरुमलाई कृष्णमाचार्य (आधुनिक योग के जनक), स्वामी शिवानंद, बी.के.एस आर्यंगर, बाबा रामदेव आदि के वीडियो यूट्यूब या अन्य चैनल्स में देखे जा सकते हैं तथा योग से संबंधित जानकारी एवं शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। बाबा रामदेव को योग कला को मुख्य धारा में लाने का श्रेय दिया जाता है। इनकी संस्था पतंजली योग पीठ द्वारा चलाए जा रहे योग शिविरों में लाखों लोग योग सीखने एवं आवश्यक जानकारी लेने के लिए जाते हैं।

नियमित योग एवं प्राणायाम आपके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकती है जो आपके जीवन में घटने वाली बहुत सी समस्याओं के समाधान में सहायक होती है। यह केवल शारीरिक शक्ति ही प्रदान नहीं करता बल्कि मानसिक रूप से आपको मजबूत करती है। योग करते समय कुछ सावधानियों को भी ध्यान में रखना बहुत ही आवश्यक है जैसे -

योग क्षमता से अधिक नहीं करना चाहिये। योग खाली पेट करना चाहिये।

योग सही मुद्रा एवं सही से सीखने के बाद ही करना चाहिये। योगासन करने के बाद तुरंत स्नान न करें।

दो चाँद

दो चाँद रहते हैं, मेरे इस जहान में एक चाँद धरती का है, दूजा आसमान में।
एक चाँद बादलों में आता है रात में, एक चाँद रहता हरदम, मेरे दिलोजान में॥
एक रात देखे मैंने दोनों चाँद साथ में। चाँदनी बिखेरती, दोनों आधी रात में।
देखकर तुम्हें तो चाँद, छुप गया था मेघों में, जो चाँद रहता हरदम, था अभिमान में॥
तू मेरे दिल में बसी है, तू बसी है जान में, नाम तेरा अधरों में है, तू बसी है ज्ञान में।
जबसे तुझको देखा मैंने, फूल खिलने लगे, हरियाली छापी रहती, दिल के बियाबान में॥
केश तेरे ऐसे जैसे, मेघ बरसात में।



कुमार सौरभ
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

रम्य रूप महके ऐसे, सौरभ हो बात में आँख तेरे मधुकलश हैं,
होंठ हैं गुलाब से, गाल लाल-लाल जैसे, फूल उद्यान में॥
नाम तेरा है जुबाँ पर, तू ही है ध्यान में, तू ही है गीता मेरी, तू ही है कुरान में,
बेचैन रहता हरदम, मैं तो तेरी याद में, याद तेरी रात में है, याद है प्रमान में॥
तुझको मैं दिल में बसाऊँ, या बसा लूँ जान में। तुझको मंदिर में रखूँ या बोलूँ हर अज्ञान में॥
मैं नजर को कहीं घुमाऊँ, हर तरफ तू ही दिखे, तू ही अल्लाह में दिखे और तू दिखे भगवान में॥

स्मृति के पन्नों से...



लक्ष्मीकान्त
सेवानिवृत्त परिचारक

30 सितंबर, 1976 की बात है, ए.जी. ऑफिस की विभागीय कैटीन में जिंदगी की शुरुआत... सीमेंट के चादर वाली छत के नीचे छोटी सी कैटीन।

बड़े-बड़े चार कोयले के भट्टे और स्टोव से सजी कैटीन। ऑफिस के बाबुओं के 10-10 रुपये के सहयोग से बनी कैटीन। बदले में बाबुओं को क्रेडिट कूपन की 7 कॉपी दी गई। इसके 5 रुपये के कूपन से सामान पर 1 रुपये की छूट दी जाती थी बाबुओं को। बाबू इस में खुश हो जाते थे।

खस की टटिया से शुरुआत की थी इस ऑफिस ने। ठण्ड के महीने में कच्चे कोयले की अंगीठी से गर्माहट आती थी हर सेक्शन में। लाइट न होने पर मिट्टी के तेल वाली गैस से दफ्तर में रोशनी होती थी। कैटीन के बगल में ही साइकिल स्टैंड था। हजारों साइकिल का तांता रोज लगता था, तब गिनती के बराबर कार दिखा करती थी।

10 से 5 की इयूटी में 10 बजे रजिस्टर में हस्ताक्षर, और 10:40 पर रजिस्टर बंद।

पी.ए.जी. के गेट की भी अपनी अलग गरिमा होती थी, दूसरी पब्लिक उस गेट को पार नहीं करती थी। बाकी तीन अलग गेट पब्लिक के लिए थे।

10 पैसे की जनरल चाय, 12 पैसे में स्पेशल चाय

15 पैसे में जनरल कॉफी, 20 पैसे में स्पेशल कॉफी

250 कप रोज निकल जाते थे कैटीन में

50 पैसे के पॉट में दूध, चीनी, लीकर अलग-अलग भी मिल जाता था।

5 पैसे में आलू टिकिया, समोसा आता था इनमें 2 पैसा ज्यादा मुनाफा होता था।

10 पैसे के आलू रोल बड़े साइज के आते थे इसमें 1 पैसे का घाटा भी हुआ करता था।

4 आने के रसगुल्ला से मुँह मीठा और 1 रुपये में 15 पूड़ियों में 2 लोग खा लेते थे। पूरा खाना 75 पैसे में आ जाता था।

पी.ए.जी. का चपरासी उस समय सुनहरे टोपी (झालरदार), सीने पर पीतल की बेल्ट पहने दिखता था। इसके मंजूरी के बिना पी.ए.जी. से मिलना मुश्किल हो जाता था।

अधिकारी लोग भी अपने चपरासी पर ध्यान देते थे। कब तक खड़ा रहेगा? सोचकर चपरासी लोग को स्टूल दे दिया जाता था।

ऑफिस में भी सब की कुर्सी अलग-अलग होती थी।

6 जून, 1980 – भारत बंद हुआ तब बाहरी कर्मचारियों के लिये ऑफिस में रुकने की व्यवस्था की गई।

अपनी-अपनी बातों को कर्मचारी अपने यूनियन में बताते थे कर्मचारी यूनियन पी.ए.जी.को विज्ञापन देते थे और

पी.ए.जी. द्वारा यथाशीघ्र समस्या का समाधान किया जाता था।

टाइपराटर की खड़खड़ाहट दिन भर ऑफिस में गूँजती थी तथा बड़े-बड़े मोटे रजिस्टर में हाथ से लिखा-पढ़ी होती थी।

सन् 1981 में मेरी नौकरी कॉफी मशीन में लगाई गई। मैं हिचक रहा था, तकनीकी ज्ञान नहीं था मुझे, मैंने स्पष्ट कहा मशीन गड़बड़ हुई तो मेरी जिम्मेदारी न रहेगी।

डी.ए.जी. आलूवालिया जी ने समझाया किसी काम में न नहीं किया जाता बेटा! फिर भी लिखित आश्वासन मिलने पर ही मैंने कॉफी मेकर के पद पर काम करते हुए अपनी सेवा अपने ऑफिस को यथाशक्ति समर्पित की।

कविता

मेरी सूनी ज़िन्दगी में,
दिया जलाती हो तुम।
मेरी अंधेरी ज़िन्दगी में,
रास्ता दिखाती हो तुम!
जब भी अकेले होती हूँ,
माँ! तुम्हें याद करती हूँ।

तन्हा वक्त नहीं कटता जब,
याद कर तुम्हें मन बहलाती हूँ।
हकीकत कुछ और होता है,
जब अकेले होती हूँ।
तुम्हें याद करती हूँ।

तपती धूप में,
ठंडक की एक छांव हो तुम!
चारों तरफ जब हो घनघोर अंधेरा,
तब प्रकाश की एक किरण हो।
तुम्हें याद करती हूँ।

तुम हौसला बढ़ाती हो,
ढाढस बंधाती हो
जिन्दगी से हार न मानने को
प्रेरित करती हो तुम!
माँ तुम भगवान की
जीती जागती तस्वीर हो
माँ जब अकेले होती हूँ
तुम्हें याद करती हूँ
माँ तुम्हें याद करती हूँ.....।



शुमन केशरी
सहायक पर्यवेक्षक

'योग अपूर्णता से सम्पूर्णता की ओर'

वाढ्य गंगवाढ
अंतराष्ट्रीय योगशिक्षिका
(सुपुत्री श्री देवपाल)
सेवानिवृत्त वरिष्ठ सम्प्रेक्षक



न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।

तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।

(भगवत गीता श्लोक 4.38 (अध्याय 4, श्लोक 38))

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाली कोई वस्तु नहीं है। जिसने योग में पूर्णता प्राप्त कर ली, वह समय के साथ ब्रह्म ज्ञान को अपने भीतर पा ही लेता है।

मेरा शरीर 'मैं' नहीं, बल्कि 'मेरा' है।

मेरा मन 'मैं' नहीं, बल्कि 'मेरा' है।

मैं अपने मन और शरीर का स्वामी हूँ।

जो व्यक्ति अपने मन पर जीत हासिल कर लेता है उसे दुनिया में कोई हरा नहीं सकता और आत्मज्ञान से ही मनुष्य अपने मन पर विजय प्राप्त कर सकता है।

हम अपने आसपास की दुनिया से लगातार संपर्क में रहते हैं। जीवन के संघर्षों में अक्सर ही परेशानियों का हल अपने बाहर ढूँढते रहते हैं। भारत के ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पहले ही मानव के स्वभाव का गूढ़ता से अध्ययन किया हुआ था। उन्होंने यह देखा कि मानव की समस्त ज्ञानेंद्रियां बाहर की ओर खुलती हैं। स्वभावतः हमारा मन और बुद्धि सदैव बाहरी संसार में ही उलझा रहता है। हम सदैव ही बाहर की ओर खोज करने के लिए बाध्य रहते हैं। संसार के सुख और दुःख रूपी इस सागर में मानव सदैव इसी तरह उलझा रह जाता है। समस्त प्रकार की आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियां भी हमें पूर्ण खुशी देने में असमर्थ होती जा रही हैं। किंतु प्राचीन भारत के महान ऋषि मुनियों ने पहले ही हमारे मन को शांत रखने की प्राचीन विद्या को खोज निकाला था। लगभग 6000 वर्ष पुरानी यह प्राचीन विद्या ना केवल मनुष्य को स्वस्थ जीवन देने में समर्थ है अपितु वह हमें यह भी सिखाती है कि जीवन का खेल क्या है और इसे कुशलतापूर्वक खेला कैसे जाए।

योग उस महान विद्या का नाम है जो पतंजलि के योग सूत्रों में उल्लिखित है जिसे महान ऋषि पतंजलि ने संपूर्ण धरती पर उपस्थित मानव जीवन के कल्याण के लिए संकलित किया था। पतंजलि योग सूत्र मनुष्य के मन मस्तिष्क में उठने वाले हर उस प्रश्न के उत्तरों का संकलन है जिसे अपने जीवन में निष्ठा पूर्वक उतार लेने भर से मनुष्य का जीवन सार्थक हो सकता है। महान ऋषि पतंजलि ने 3 ग्रंथ लिखे।

“व्याकरण महाभाष्य, योगसूत्र और आयुर्वेद संहिता”

योगसूत्र के माध्यम से उन्होंने मन की अशुद्धियों को दूर किया, व्याकरण के माध्यम से उन्होंने वाणी की अशुद्धियों को दूर किया और आयुर्वेद पर अपनी रचना के माध्यम से शरीर की बीमारियों को दूर किया।

क्या यही काफी नहीं है कि सफल जीवन जीने का हर मूल मंत्र हमारी प्राचीन भारतीय सभ्यता में पहले से ही उल्लिखित है जिसे हमें सिर्फ निष्ठा पूर्वक अमल करना भर है। कृपया इस पर विचार करें।

योग का अर्थ और उसकी महत्ता

प्राचीन भारतीयों ने ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक अनोखी तकनीक अपनाई थी। यहां प्रयोग परीक्षण और अवलोकन बाहरी तौर पर नहीं बल्कि मानव शरीर और दिमाग के अंदर किया जाता था। माना जाता है कि मानव शरीर उस विशाल ब्रह्मांड का ही एक अंश है। ‘यत् पिण्डे तत् ब्रह्मांडे’ जो ब्रह्माण्ड में है, वही हमारे भीतर है’ इस ऊर्जा के साथ मानव क्या कुछ हासिल नहीं कर सकता।

योग शब्द का जन्म संस्कृत शब्द युज से हुआ है जिसका अर्थ है - एकीकृत करना या स्वयं का सर्वश्रेष्ठ (सुप्रीम) स्वयं के साथ मिलन जिसके सूत्र हमें दुनिया की पहली पुस्तक ऋग्वेद में मिलते हैं। योग में आसन, प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से हम मन श्वास और शरीर के विभिन्न अंगों में 20 सामंजस्य बनाना सीखते हैं।

योग हमें सिखाता है कि आधुनिक मनुष्य के सामने आने वाली चुनौतियों को अगर सही प्रकार से सुलझाया नहीं गया तो अंततोगत्वा वह कभी ना कभी शारीरिक या मानसिक रूप में उभर कर सामने आ ही जाता है जब हमारी शारीरिक स्थिति ठीक नहीं होती तो हमारी मानसिक स्थिति में असंतुलन पैदा हो जाता है। असंतुलित मानसिक और शारीरिक स्थिति के साथ कोई भी मनुष्य इस धरती पर खुशहाल जीवन व्यतीत करने में सक्षम नहीं है। असंतुलन से कुशलतापूर्वक इसी संतुलित जीवन जीने की कला को सिखाता है योग।

ऑफिस में योग का महत्व

ऑफिस में लगातार काम करने से हमारे दिमाग और शरीर में तनाव महसूस हो सकता है। जब हम तनाव महसूस करते हैं, तो यह हमारी पीठ, गर्दन, कंधों और आंखों को नुकसान पहुंचा सकता है। लंबे समय तक बैठे रहने से हमारी गर्दन, पीठ और कंधों में अकड़न और दर्द भी हो सकता है। आजकल ऑफिसों में कंप्यूटर का इस्तेमाल तेजी से बढ़ता चला जा रहा है। कंप्यूटर स्क्रीन से निकलती हुई हानिकारक किरणें हमारी आंखों और मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डालती हैं जिससे हमें सिरदर्द हो सकता है, सांस लेने में कठिनाई हो सकती है, हमारे पेट में दर्द भी हो सकता है।

अनायास ही इससे हमारी कार्यक्षमता प्रभावित होती है तथा कार्य की गुणवत्ता पर भी बुरा असर पड़ सकता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का वास होता है और स्वस्थ मन से ही व्यक्ति ऊंची उपलब्धियां हासिल कर सकता है। समय के अभाव में ऑफिस जाने वाले व्यक्तियों के लिए कुछ योगाभ्यास अत्यंत महत्वपूर्ण है जिनको करते रहने से गंभीर रोगों से बचा जा सकता है।

सही मुद्रा में बैठें

सर्वप्रथम आप ऑफिस चेयर्स पर सही मुद्रा में बैठना सीखें। अगर आप कुर्सी पर घंटों पीठ गोल करके और कंधे झुका के बैठने के आदी हैं तो सावधान हो जाइए। यह आदत आपके स्वास्थ्य के लिए आगे चलकर इतनी भारी पड़ सकती है जिसका आपको अंदाजा भी नहीं है। कुर्सी पर पीठ सीधी करके और गर्दन को बिना झुकाए बैठने की आदत को विकसित करें। अपने कंप्यूटर और लैपटॉप को अपनी आंख की सिधाई पर रखने की कोशिश करें। लंबे समय तक झुक कर ना बैठे रहें, बीच-बीच में चहलकदमी करते रहें।

आँखें : सूक्ष्म योग अनुसार आंखों को दाएं-बाएं तथा ऊपर-नीचे चलाने का प्रयास करें। बीच-बीच में आंखों को ठंडे पानी के छींटों से रिफ्रेश करते रहें। इससे समय और उम्र के साथ आपकी आंखों की मांसपेशियाँ सुदृढ़ रहेंगी।

गर्दन : लंबे समय तक गर्दन झुका कर बैठने से गर्दन की मांसपेशियाँ कमजोर हो सकती हैं तथा लंबे समय बाद यह सर्वाइकल स्पोन्डिलाइटिस के रूप में उभर सकती है। गर्दन को सांसों के साथ ऊपर तथा नीचे दाएं तथा बाएं कम से कम 5 बार घुमाने का प्रयास करें इससे गर्दन की मांसपेशियाँ मजबूत होंगी।

कंधे : कंधे के दर्द से लोग अक्सर ही ग्रसित रहते हैं। कंधे का महत्वपूर्ण जोड़ बॉल और साकेट होता है अँगुलियों के पोरों को एक-दूसरे से मिलाते हुए उन्हें कंधे पर रखें। फिर कोहनियों को दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ घुमाएँ। ठीक इसके विपरीत भी।

रीढ़ : कहा जाता है कि आप तब तक जवान हैं जब तक आपकी रीढ़ की हड्डी जवान हैं। गति और व्यायाम की कमी के कारण रीढ़ की हड्डी के आसपास की मांसपेशियाँ, स्नायुबंधन और टेंडन कठोर और अनम्य हो सकते हैं। रीढ़ की हड्डी की निष्क्रियता से साँसों के रोग स्लिड डिस्कसिण्ड्रोम, लम्बर स्पाइलोलिसिस, बल्टिंग डिस्क आदि कई तरह के रोगों का जन्म हो सकता है। स्पाइन को पीछे झुकाते समय सांस अंदर भरें तथा आगे झुकते हुए सांस छोड़ दें। साइड द्विस्ट करते समय भी सांस छोड़ कर पीछे देखें।

साँस लेने की तकनीक

आप भोजन के बिना कितने समय तक जीवित रह सकते हैं कुछ दिन और बिना सोए? शायद 3 दिन तक पर आप साँस के बिना कितने समय तक जीवित रह सकते हैं शायद कुछ मिनट ? साँस के बिना हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

साँस ही जीवन है!

जीवन का पहला कार्य है - श्वास लेना! जीवन का अंतिम कार्य है - श्वास छोड़ना!

क्या आप जानते हैं कि आपके फेफड़ों की कुल क्षमता लगभग 6 लीटर है? हालाँकि हम हर साँस में केवल आधा लीटर हवा ही अंदर लेते हैं। ध्यानपूर्वक साँस लेने पर हम इसे तीन लीटर तक ले जा सकते हैं। यहां आती है यौगिक श्वास की महत्वपूर्ण भूमिका।

जब हम यौगिक सांस के बारे में बात करते हैं, तो हम ऊपरी शरीर के 3 हिस्सों - ऊपरी छाती और क्लैविक्युलर, वक्ष या छाती, और पेट या डायाफ्राम, को शामिल करते हुए गहरी सांस लेने की बात करते हैं। यही कारण है कि योगिक श्वास को 3 भाग श्वास के रूप में भी जाना जाता है। इस प्रकार की सांस लेने से फेफड़ों की क्षमता का पूरा उपयोग होता है।

क्या मैं सही तरीके से यौगिक श्वास ले रहा हूँ? यौगिक श्वास लेते समय हमारे पेट में ज्यादा से ज्यादा सांस भरती है, छाती ज्यादा नहीं बाहर आती और पेट फूल जाना चाहिए। यौगिक श्वास कहीं भी बैठे-बैठे आरामदायक अवस्था में ली जा सकती है।

योग एक जीवन दर्शन है, जो रोगों के मूल कारण को खत्म करके शरीर में स्थिरता प्रदान करता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य आंतरिक यात्रा करना है। जब मन और शरीर के बीच पूर्ण सामंजस्य होता है, तो हम जीवन के प्रति पूर्ण संतुलन और नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं।

'DON'T BE THE SERVANT TO YOUR BODY AND MIND. MAKE BODY AND MIND, YOUR FAITHFUL SERVANT.'

नोट: योगाभ्यास करते समय अपने शरीर का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए तथा शरीर में कहीं भी दर्द होने पर योग शिक्षक या चिकित्सीय सलाह जरूर लें।

पुलकित जीवन, तन, मन, उपवन वर्षा ऋतु

तबश्शुम नक्रवी

पुत्री - स्व. सै. आबिद हुसैन नक्रवी
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी



परिवर्तन प्रकृति का नियम है, यदि बदलाव न हो तो जीवन नीरस हो जाएगा। प्रकृति ने हमें कई तरह की ऋतुयें देकर जीवन को नीरस होने से बचाया है। यूँ तो हर एक ऋतु का अपना महत्व है परन्तु मेरी मनभावन ऋतु वर्षा ऋतु है। वर्षा का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्व है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती और वर्षा ऋतु से मिलने वाले जल पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

पानी की बूँदें सब पर अलग-अलग प्रभाव डालती हैं, पेड़-पौधे ऐसे झूमने लगते हैं मानो प्रकृति ने उन्हें सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्रदान किया हो, मिट्टी पर पड़ते ही भीनी सी खुशबू तन-मन में मीठा सा रस घोल देती है, उपवन भी खिल उठते हैं। आकाश में इन्द्रधनुष को देखकर मोर भी अपने इन्द्रधनुषीय पखों को फैलाकर नाचने लगते हैं।

मेरा भी मन है कि मैं भी पानी में खूब भीगूँ और तितली की तरह इधर उधर उड़ती फिरूँ बस इन्तजार है उस ऋतु का जो आज के हालात को हमेशा-हमेशा के लिए अपने संग ले आए और हमारा जीवन पहले की तरह हरा-भरा हो जाए।

धन्यवाद!

नज़्म



अमित कुमार 'खामोश'

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सोचता हूँ कि मशहूर तुम्हारा नाम कर दूँ।
अधूरी कहानी का खत्म अंजाम कर दूँ।
आ न पाए सुबह तक कोई होश में,
इस कदर महफ़िल ए ज़ाम कर दूँ।
हौसला न तुम में दो कदम साथ चलने का,
अकेले मैं मुहब्बत के सारे काम कर दूँ।
इजहार कर दो तुम जो सामने आकर के,
ऐसे इश्क में खुद को मैं बदनाम कर दूँ।
चली गयी आदत 'खामोश' वार करने की,
जिद पे आऊं तो कत्लेआम कर दूँ।

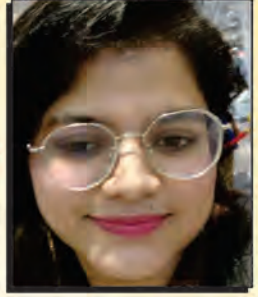
क्या लोगी तुम कीमत मुझे अपना बनाने की।
देने के अलावा सांसे हैसियत नहीं दीवाने की।
देखता हूँ मैं खूबसूरत चेहरे यूँ तो हर रोज,
सिर्फ तुम हो मलिका-ए-हुस्न इस ज़माने की।
ये तेरा साथ-साथ चलकर करना बात मुझसे,
क्या मुझे अब भी जरूरत है तुम्हें मनाने की
सबको नसीब होती हैं मजबूरियां ज़िन्दगी में,
हमने तो पाई है सज़ा जहाँ में मुस्कुराने की
वादा ला देंगे जन्नत 'खामोश' तुम्हारे कदमों में,
रखेंगे लोग याद कहानी अपने आशियाने की।

खुश थे बहुत हम बीच यारों के।
फूल थे हम सब जैसे बहारों के।
कैसे थे मेरे यार न पूछो हमसे ये,
सुन लो किस्से बस सितारों के
सजाते महफ़िल रोज बातों की,
होती सैर समुन्दर किनारों के।
होती थी शरारत समझदारी में,
उठाते फ़ायदा ईंट के दरारों के।
होता वक्त जब इम्तिहान का तो,
घूम आते मेले खूब बाजारों के
मार-मार समझाना अदीब का दो,
एक बना देना हो बीच हज़ारों के
निकालते आंसू चुपचाप अकेले में,
समझे हालात-ए-इंशा बिन सहारे के
न गम न कोई शिकवा गिला था,
बनाते महल रेत पर लकीरों के।
बदला वक्त या बदल गया 'खामोश',
खुशी नहीं मिलती पास जो फकीरों के।

मानसिक सुख और सन्तोष

अनुष्का श्रीवास्तव

पुत्री - श्री नील श्रीवास्तव
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी



जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान
संतोषी सदा सुखी
गौधन गजधन वाजिधन और रतन धन खानि
जब आवै संतोष धन सब धन धूरि समान

आज भले ही संतोषी स्वभाव वाले व्यक्ति को मूर्ख और कायर कहकर हंसी उड़ाई जाय लेकिन संतोष ऐसा गुण है जो आज भी सामाजिक सुख शांति का आधार बन सकता है। असंतोष और लालसा ने श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों को उपेक्षित कर दिया है। चारो ओर ईर्ष्या, द्वेष और अस्वस्थ होड़ का बोलबाला है। परिणामस्वरूप मानव जीवन की सुख शान्ति नष्ट हो गयी है।

दुनिया में धन का हमेशा से ही महत्त्व रहा है। धन से सब कुछ खरीदा जा सकता है। धन को सुख का साधन माना गया है। आज मनुष्य का सारा जीवन धन कमाने में ही बीतता है। इसके लिए वह उचित-अनुचित सब उपाय अपनाता है। आर्थिक मनोकामनाएँ निरंतर पूरी होते रहने पर भी मनुष्य असन्तुष्ट रहता है।

अन्तर्मन की अशान्ति व असंतोष मानव जीवन का अभिशाप है और इसके विपरीत मन की शान्ति व संतोष मानव जीवन का वरदान है। इस सम्बन्ध में भारत के अनेक कवियों की काव्य-पंक्तियों को उद्धृत किया जा सकता है:-

साईं इतना दीजियो जामें कुटुंब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।
कबीर मीत न नीत गलीत है जो धरिये धन जोर।
खाए खरचे जो बचै तौ जोरिये करोर।

उपर्युक्त सभी पंक्तियों में रचनाकारों ने एक ही बात पर जोर दिया है कि संसार में संतोषरूपी धन ही सबसे बड़ा धन है और जब यह प्राप्त हो जाता है तो संसार में किसी भौतिक धन की आवश्यकता नहीं रह जाती।

आज सारा संसार पूँजीवादी व्यवस्था को अपनाकर अधिक-से-अधिक धन जोड़ने की होड़ में लगा हुआ है। मान्यता यह हो गई है कि कैसे भी कमाया जाये अधिक धन कमाना है। धनोपार्जन के लिए मनुष्य किसी भी सीमा तक गिर सकता है। अनुचित साधनों द्वारा अर्जित काला धन ही लोगों की उज्ज्वलता का माध्यम बन गया है। अतः संसार की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था दूषित हो गई है। अधिकाधिक धन बटोरने की होड़ मची है। अमीर और अमीर बन रहा है। गरीब और गरीब होता जा रहा है। गरीब मजबूर है, आत्महत्या करने को विवश है। मानव-जाति आज जिस स्थिति में पहुंच गई है, उसका कारण कहीं बाहर नहीं है स्वयं मनुष्य के अन्तर्मन में ही है। आज का मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि उसे केवल अपना सुख ही दिखाई देता है। वह स्वयं अधिक से अधिक धन बटोर कर संसार का सबसे अमीर व्यक्ति बन जाना चाहता है। यही असंतोष का प्रबलतम कारण है।

सम्पूर्ण मानव जाति आज जिस स्थिति में पहुँच गई हैं। इसका कारण कहीं बाहर नहीं हैं, स्वयं मनुष्य के मन में ही हैं। फोर्ब्स नामक पत्रिका ने इस स्पर्द्धा को और बढ़ा दिया है। इस पत्रिका में विश्व के धनपतियों की सम्पूर्ण सम्पत्ति का ब्यौरा होता है। तथा उसी के अनुसार उन्हें श्रेणी प्रदान की जाती है। अतः सबसे ऊपर नाम लिखाने की होड़ में धनपतियों में आपाधापी मची हुई है। यह सम्पत्ति असंतोष का कारण बनी हुई है। इसके अतिरिक्त घोर भौतिकवादी दृष्टिकोण भी असंतोष का कारण बना हुआ है। खाओ-पियो मौज करो यही आज का जीवन दर्शन बन गया है। इसी कारण सारी नीति और मर्यादाएं भूलकर आदमी अधिक से अधिक धन और सुख-सुविधाएं बटोरने में लगा हुआ है। कवि प्रकाश जैन के शब्दों में:-

‘हर ओर धोखा झूठ फरेब, हर आदमी टटोलता है दूसरे की जेब’

प्राचीनकाल से आज तक अनेक महापुरुषों ने इस विषय में अपने विचार व्यक्त किये हैं और यही कहा है कि ‘धन केवल साधन है साध्य नहीं’। अतः संतोष धन प्राप्त करने में नहीं है, उपनिषद में भी कहा गया है- ‘तेन त्यक्तेन भुंजीथा’ जो त्याग करने में समर्थ है उसे ही भोगने का अधिकार है। अतः संतोष में ही सुख है। किन्तु यह उपदेश केवल गरीबों के लिए है और एक तरफा है।

इच्छाओं का अंत नहीं, तृष्णा कभी शांत नहीं होती, असंतुष्टि की दौड़ कभी खत्म नहीं होती, जो धन असहज रूप से आता है। वह कभी सुख शान्ति नहीं दे सकता, झूठ बोलकर, तनाव झेलकर, अपराध भावना का बोझ ढोते हुए, न्याय, नीति, धर्म से विमुख होकर जो धन कमाया जाएगा, उससे चिंताएं, आशंकायें और भय ही मिलेगा सुख नहीं। इस सारे जंजाल से छुटकारा पाने का एक ही उपाय है और वह है संतोष की भावना।

संतोष का अर्थ है तृप्ति! यह एक अवधारणा है। अगर कोई मनुष्य अपने मन-मस्तिष्क में इसे धारण कर पाता है, तो वह सुखी हो जाता है। संतोष से संतुष्टि मिलती है और संतुष्टि ‘संतुष्ट’ होने का भाव है, तृप्त होने का भाव है।

हम मानसिक सुखों को मानसिक घटनाओं के लिए आत्मा की प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करते हैं (हालांकि एक स्तर पर, यहां तक कि मानसिक या मानसिक घटनाओं को विशुद्ध रूप से भौतिक शब्दों में समझाया जा सकता है, परमाणुओं की गति के रूप में)।

जीवन में ‘सुख’ का अभिप्राय केवल उपभोग-सुख नहीं है, परन्तु आजकल लोग केवल उपभोग के साधनों को भोगने को ही ‘सुख’ कहने लगे हैं। विभिन्न प्रकार के मानसिक, शारीरिक तथा सूक्ष्म आराम भी ‘सुख’ कहलाते हैं।

मस्तिष्क का आनंद केंद्र तंत्रिका कोशिकाओं के माध्यम से आगे बढ़ने के लिए जाना जाता है जो न्यूरोकेमिकल डोपामिन का उपयोग करके संकेत करता है और आम तौर पर वीटीए में स्थित होता है। डोपामिनर्जिक न्यूरोन्स आनंद संकेतों को पारित करने के लिए एक ‘उल्लेखनीय क्षमता’ प्रदर्शित करते हैं।

एंडोर्फिन - खुशी के हार्मोन - जो आकर्षण महसूस करने से जुड़े हैं। डोपामाइन, जो तब उत्पन्न होता है जब हम संतुष्ट महसूस करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप हम खुश, उत्साहित और उत्तेजित महसूस करते हैं। ऑक्सीटोसिन, जो रिश्तों से जुड़ा हुआ है और हमें अन्य मनुष्यों के साथ संबंध बनाने में मदद करता है।

आज नहीं तो कल धन के दीवानों को अक्ल आएगी। धन समस्याओं को हल कर सकता है भौतिक सुख सुविधाओं को दिला सकता है, किन्तु मन की शान्ति तथा चिंताओं और शंकाओं से रहित जीवन धन से नहीं ‘संतोष’ से ही प्राप्त हो सकता है। संतोषी सदा सुखी यह कथन आज भी प्रासंगिक है। असंतोषी तो सिर धुनता है तब संतोषी सुख की नींद सोता है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संतोष का उपदेश देना ही काफी नहीं है, उत्पादन के साधनों का समान वितरण भी जरूरी है। जब समाज में असमानता नहीं होगी, अमीरी-गरीबी के दो ऊँचे-नीचे पर्वत नहीं बने होंगे तो असंतोष स्वयं ही नष्ट हो जायेगा।

‘ईमानदारी और स्वाभिमान’

हरिकेश सिंह ‘शूर्यवंशी’

कल्याण सहायक



आइये आज एक ऐसी प्रेरक कहानी सुनते हैं, जो मानव को मनुष्य बनाने की यात्रा में उसे आदर्शवादिता के उत्तुंग शीर्ष पर पहुँचाता है तथा उसके अंदर नैतिक मूल्यों तथा आचार-विचारों का समावेश कर के उसे एक महामानुष में परिवर्तित करता है।

एक बार की बात है कि हमेशा की तरह राजस्थान में विश्व प्रसिद्ध पुष्कर मेला लगा था जिसमें चहलकदमी करते हुए एक व्यापारी को व्यापार के लिए एक अच्छी नस्ल का ऊँट नज़र आया।

व्यापारी और ऊँट बेचने वाले ने वार्ता कर, एक कठिन सौदेबाजी की। ऊँट विक्रेता ने अपने ऊँट को बहुत अच्छी कीमत में बेचने के लिए, अपने उच्च कौशल का प्रयोग कर व्यापारी को सौदे के लिए राजी कर लिया। वहीं दूसरी ओर व्यापारी भी अपने नए ऊँट के अच्छे सौदे से अत्यधिक प्रसन्न था। व्यापारी अपने पशुधन के बेड़े में एक नए सदस्य को शामिल करने के लिए उस ऊँट के साथ गर्व से अपने घर चला आया।

घर पहुँचने पर, व्यापारी ने अपने नौकर को ऊँट की काठी निकालने में मदद करने के लिए बुलाया। भारी गद्देदार काठी को नौकर के लिए अपने बलबूते पर ठीक करना बहुत मुश्किल प्रतीत हो रहा था। अंततः उसे सफलता मिली और वह उसे ठीक करने में कामयाब हो गया।

काठी के नीचे नौकर को एक छोटी मखमली थैली मिली, जिसे खोलने पर पता चला कि वह कीमती गहनों से भरी हुई है।

नौकर अति-उत्साहित होकर बोला, ‘मालिक आपने तो केवल एक ऊँट खरीदा। लेकिन देखिए इसके साथ क्या मुफ्त में आया है?’

अपने नौकर के हाथों में रखे गहनों को देखकर व्यापारी चकित रह गया। वे गहने असाधारण गुणवत्ता के थे, जो धूप में जगमगा और टिमटिमा रहे थे।

व्यापारी ने कहा, ‘मैंने ऊँट खरीदा है, गहने नहीं! मुझे इन जेवरों को ऊँट बेचने वाले को तुरंत लौटा देना चाहिए।’

नौकर हतप्रभ सा सोच रहा था कि उसका स्वामी सचमुच मूर्ख है! वो बोला, ‘मालिक! इन गहनों के बारे में किसी को पता नहीं चलेगा।’

फिर भी, व्यापारी वापस बाजार में गया और वो मखमली थैली ऊँट बेचने वाले को वापस लौटा दी।

ऊँट बेचने वाला बहुत खुश हुआ और बोला, ‘मैं भूल गया था कि मैंने इन गहनों को सुरक्षित रखने के लिए ऊँट की काठी में छिपा दिया था। आप, पुरस्कार के रूप में अपने लिए कोई भी रत्न चुन सकते हैं।’

व्यापारी ने कहा 'मैंने केवल ऊँट का सौदा किया है, इन गहनों का नहीं। धन्यवाद, मुझे किसी पुरस्कार की आवश्यकता नहीं है।'

व्यापारी ने बार-बार इनाम के लिए मना किया, लेकिन ऊँट बेचने वाला बार-बार इनाम लेने के लिये जोर डालता रहा।

अंत में व्यापारी ने झिझकते और मुस्कुराते हुए कहा, "असल में जब मैंने थैली वापस आपके पास लाने का फैसला किया था, तो मैंने पहले ही दो सबसे कीमती गहने लेकर, उन्हें अपने पास रख लिया है।"

इस स्वीकारोक्ति पर ऊँट विक्रेता थोड़ा स्तब्ध हुआ और उसने झट से गहने गिनने के लिए थैली खाली कर दी।

वह बहुत आश्चर्यचकित होकर बोला "मेरे सारे गहने तो इस थैली में ही हैं! तो फिर आपने कौन से गहने रखे"

'दोनों सबसे कीमती वाले' व्यापारी ने जवाब दिया। 'मेरी ईमानदारी और मेरा स्वाभिमान'

“स्वच्छता ही नारा”

गली-गली में चर्चा है अब,
स्वच्छ भारत अभियान की।
आओ समझे आज महत्ता,
कूड़े - कचरे दान की ॥

वृक्षारोपण बड़ी राह है,
जनता के कल्याण की।
गली-गली में चर्चा है अब,
स्वच्छ भारत अभियान की॥

साफ़ रहे परिवेश हमारा,
कूड़े का समुचित निपटारा।
चौक - चौबारे, गली मुहल्ले,
नहीं गन्दगी दिखे दुबारा॥

शौचालय का लाभ समझना,
कभी खुले में शौच न करना।
स्वच्छ रखें जो अपना तन मन,
बीमारी से फिर क्यों डरना॥

कचड़े का हो उचित प्रबंधन,
होती मदद किसान की।
गली-गली में चर्चा है अब,
स्वच्छ भारत अभियान की॥

अपने कंधे जिम्मेदारी,
पावन अनुष्ठान की।
गली-गली में चर्चा है अब,
स्वच्छ भारत अभियान की॥

प्लास्टिक पॉलिथीन बंद कर,
कागज़ के थैले अपनाएं।
खाली पड़ी भूमि पर चलकर,
मिल-जुल कर कुछ पेड़ लगाएं॥



भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

खण्ड - 3

कार्यालय की गतिविधियां

हिन्दी पखवाड़ा



प्रधान
महालेखाकार
महोदय द्वारा
दीप प्रज्ज्वलन



वरिष्ठ उप
महालेखाकार
/प्रशासन
महोदया द्वारा
दीप प्रज्ज्वलन



विभागीय गृह पत्रिका 'तरंग' के 141-142वें
संयुक्तांक का विमोचन



प्रधान महालेखाकार महोदय ने हिन्दी पखवाड़ा
के समापन समारोह के अवसर पर राजभाषा
पत्रिका की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए
इसे रोचक एवं लोकप्रिय बनाने हेतु
विभिन्न सुझाव प्रस्तुत किया।



सत्यनिष्ठा भवन के प्रथम तल पर स्थित
पुस्तकालय में दिनांक 14.09.2022 को
उद्घाटन समारोह के उपरान्त पुस्तक प्रदर्शनी



सतर्कता जागरूकता सप्ताह



सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मदिन दिनांक 31 अक्टूबर के उपलक्ष में नागरिक भागीदारी के माध्यम से सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी तथा सत्य निष्ठा को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह पर कर्मचारियों को पुरस्कार वितरण एवं संबोधन करते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय

ऑडिट दिवस

दिनांक 16 से 24 नवंबर 2022 तक प्रयागराज स्थित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के समस्त कार्यालय द्वारा ऑडिट सप्ताह मनाया गया इस दौरान विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन यथा साइकिल रैली गरीबों को कंबल का वितरण संगम पर स्वच्छता अभियान आदि कार्यक्रम संपादित किए गए।



गणतंत्र दिवस समारोह

कार्यालय में प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा 74 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। ध्वजारोहण के पश्चात तिरंगे को सलामी भी दी गई। राष्ट्र ध्वज फहराने के उपरांत प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा सरस्वती सभागार स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तैल्य चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर विश्व के सबसे वृहद गणतंत्र की स्थापना में उनके योगदान को याद किया गया। तत्पश्चात् दीप प्रज्वलन कर सांस्कृतिक कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय में उत्कृष्ट कर्तव्यनिष्ठा दर्शाने वाले विभिन्न कार्मिकों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उनके कार्यों की प्रशंसा की गई।

अपने अध्यक्षीय भाषण के दौरान प्रधान महालेखाकार महोदय ने सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं दीं तथा राष्ट्र एवं समाज की प्रगति हेतु अपने जिम्मेवारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने की बात कही। प्रधान महालेखाकार महोदय ने बताया कि एक विस्तृत राष्ट्र को सफलतापूर्वक शासित करने हेतु संविधान की भूमिका अहम हो जाती है। हमारे संविधान निर्माताओं ने गणतंत्र की मूल भावना को केंद्र में रखते हुए 'जनता का शासन' स्थापित किया है। उन्होंने वर्तमान समय में संविधान और विधिक नियमों के प्रति और अधिक निष्ठा एवं अनुपालन सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर बल दिया।



कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ उपमहालेखाकार/प्रशासन महोदया द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। महोदया ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सामान्य प्रशासन अनुभाग एवं कल्याण अनुभाग का आभार व्यक्त करते हुए उपस्थित अधिकारी व कर्मचारी गण को धन्यवाद दिया।



भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

“सरलता, बोधगम्यता और शैली की दृष्टि से
विश्व की भाषाओं में हिन्दी महानतम स्थान रखती है।”

- अमरनाथ झा

खेल किट वितरण समारोह

कार्यालय में कार्यरत विभिन्न खेलों के वर्तमान एवं भूतपूर्व खिलाड़ियों को प्रधान महालेखाकार एवं उपमहालेखाकार महोदय द्वारा खेल किट वितरित कर सम्मानित किया गया।



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

दिनांक 21 जून 2023 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कार्यालय के प्रथम तल स्थित सरस्वती सभागार में एक योगाभ्यास सत्र का आयोजन किया गया। प्रातः 7 बजे से आयोजित इस योगाभ्यास सत्र में कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। योग प्रशिक्षक ने कार्यालय के काम-काज में योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला तथा अनेक योगासनों के माध्यम से कर्मियों के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर करने का उपाय बताया। इस सत्र में वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/कल्याण महोदय की सक्रिय भागीदारी रही तथा उन्होंने योग को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की आवश्यकता पर बल दिया। सत्र के अंत में सभी अधिकारियों एवं कर्मियों ने सत्र के सफल संचालन हेतु आमंत्रित प्रशिक्षक के प्रति आभार व्यक्त किया।



अंगदान दिवस

दिनांक 3 अगस्त को विश्व अंगदान दिवस वैश्विक कार्यक्रम में कार्यालय के कर्मचारियों एवं अधिकारियों को शपथ दिलाते हुए उपमहालेखाकार महोदय

सेवानिवृत्ति कार्यक्रम

निष्ठापूर्वक अपनी सेवा अवधि पूर्ण करने के उपरांत सेवानिवृत्त हो रहे विभिन्न अधिकारी व कर्मचारीगण को प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कर्मिकों ने कार्यालय से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया एवं सम्मान हेतु प्रधान महालेखाकार महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।



स्वतंत्रता दिवस समारोह

प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा 77 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कार्यालय परिसर में ध्वजारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात तिरंगे को सलामी भी दी गई। इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। ध्वजारोहण के पश्चात वरिष्ठ अधिकारी गण द्वारा सरस्वती सभागार स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तैल्य चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित किया गया। तत्पश्चात दीप प्रज्वलन कर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात विभिन्न संवर्गों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को उत्कृष्ट कार्य व कर्तव्यनिष्ठा हेतु नगद पारितोषिक एवं प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय द्वारा उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सम्बोधित किया गया। उप महालेखाकार/प्रशासन महोदय ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु सामान्य प्रशासन अनुभाग एवं कल्याण अनुभाग का आभार व्यक्त करते हुए उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारीगण को धन्यवाद दिया।



सेवानिवृत्ति

अगस्त 2022 से अगस्त 2023 के बीच सेवा-निवृत्त होने वाले अधिकारी / कर्मचारीगण

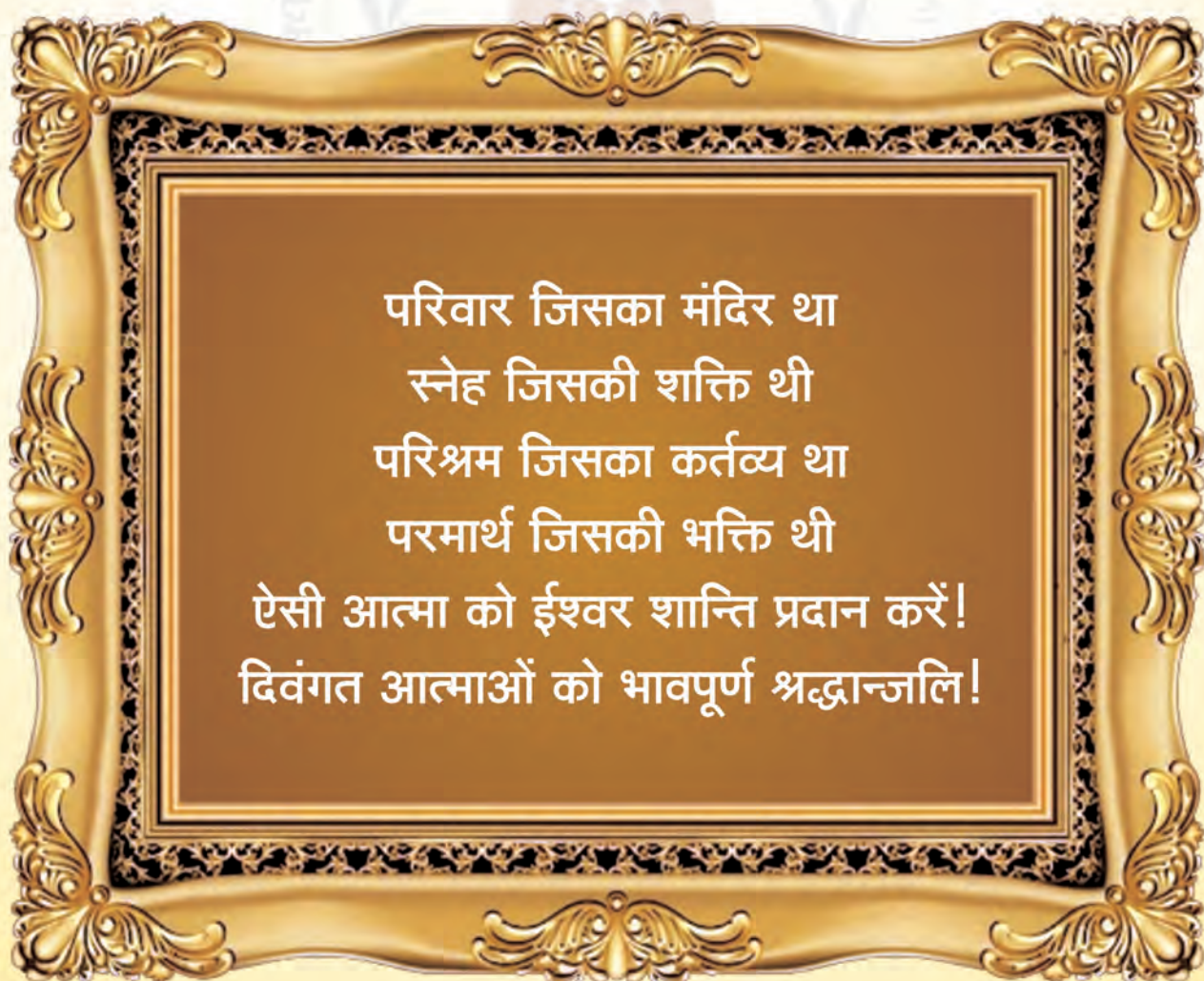
कार्यालय आपकी क्षत्यनिष्ठ सेवा एवं मार्गदर्शन की सदाहना कइते हुए
सेवानिवृत्ति के पश्चात आपके स्वस्थ एवं खुशहाल जीवन की मंगल कामना कइता है।

क्र.सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती/सुश्री	पदनाम	सेवानिवृत्ति होने का माह
1.	निरूपमा श्रीवास्तव	स.ले.प.अ.	अगस्त 2022
2.	अनिल कुमार द्विवेदी	स.ले.प.अ.	सितम्बर 2022
3.	आर.डी. मौर्या	वरि.ले.प.अ.	सितम्बर 2022
4.	आलोक कुमार	एम.टी.एस.	अक्टूबर 2022
5.	राजेश कुमार शर्मा	स.ले.प.अ.	नवम्बर 2022
6.	राकेश कुमार सिंह	वरि.ले.प.अ.	दिसम्बर 2022
7.	शमशेर सिंह	वरि.ले.प.अ.	दिसम्बर 2022
8.	निसार अहमद खान	पर्यवेक्षक	दिसम्बर 2022
9.	रमेश चन्द्र	वरि.ले.प.अ.	दिसम्बर 2022
10.	अवधेश कुमार सिंह	स.ले.प.अ.	जनवरी 2023
11.	योग माया	एम.टी.एस.	मार्च 2023
12.	नन्द लाल सरोज	स.ले.प.अ.	मार्च 2023
13.	रंजीत कुमार	वरि.ले. परीक्षक	अप्रैल 2023
14.	पूर्णमा टंडन	वरि.ले. परीक्षक	मई 2023
15.	चितरंजन दुबे	स.ले.प.अ.	जून 2023
16.	लक्ष्मी कान्त	कैन्टीन सहायक	जून 2023
17.	नबी रसूल	सहा. पर्यवेक्षक	जुलाई 2023.
18.	मोती लाल पाल	वरि.ले. परीक्षक	जुलाई 2023.
19.	अरविन्द मिश्रा	व.ले.प.अ.	अगस्त 2023
20.	संतोष कुमार मिश्रा	ले. परीक्षक	अगस्त 2023
21.	कुंवर नरेंद्र मोहन सिंह	स.ले.प.अ.	अगस्त 2023
22.	विनोद कुमार	स.ले.प.अ.	अगस्त 2023
23.	गुलाम अब्बास	स.ले.प.अ.	अगस्त 2023
24.	किरण देवी	एम.टी.एस.	अगस्त 2023

स्मृतिशेष

कार्यालय अपने प्रियजनों के अश्रामयिक निधन से शोकाकुल है।
हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को
अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें।

क्रम सं.	नाम (स्वर्गीय)	पदनाम	व्यक्तिगत संख्या	मृत्यु तिथि
1.	सुनीत वर्मा	वरि. ले. परीक्षक	यू.पी.ए.एल.ए. / 3231132	12.09.2022
2.	विनोद कुमार	एम. टी. एस.	यू.पी.ए.एल.ए. / 3231508	16.12.2022
3.	मनीष कुमार श्रीवास्तव	वरि. ले. परीक्षक	यू.पी.ए.एल.ए. / 3231716	07.07.2023
4.	महेन्द्र कुमार	एम. टी. एस.	यू.पी.ए.एल.ए. / 3232089	31.08.2023





भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्

एक पृथ्वी • एक कुटुम्ब • एक भविष्य



- Independence
- Transparency
- Accountability

SAI 20 SENIOR OFFICIAL MEETING
13-15 MARCH 2023

- Collaboration
- Continuity
- Inclusiveness





भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रकाशक :
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-प्रथम)
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

मुद्रक :
श्रद्धा इण्टरप्राइजेज
255-ए चक, जीरो रोड, प्रयागराज
मो.: 9415231308, 9305562491